9
कोर्स–'बी'

व्याकरण परिचय

पूरक पाठ्यपुस्तक

(नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित)

डॉ० उर्मिला गुप्ता
एम०ए०, बी०एड्०, एम०एड्०, पी–एच०डी०

Language House
Publishers of Indian Languages

Suppliment Book.indb 1 4/9/2026 6:06:47 PM

भूमिका

शिक्षा एक निरंतर प्रवाहित होने वाली प्रक्रिया है, जिसमें समय की माँग और विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तन अनिवार्य हैं।

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) द्वारा शैक्षिक सत्र 2026-27 के लिए कक्षा 9 के हिंदी पाठ्यक्रम 'बी' (आर-2) में महत्वपूर्ण संशोधन किए गए हैं। इन परिवर्तनों का मुख्य उद्देश्य भाषा शिक्षण को अधिक प्रासंगिक, सरल और व्यावहारिक बनाना है। पाठ्यक्रम के इस अद्यतन स्वरूप में जहाँ **'शब्द और पद', 'अनुस्वार और अनुनासिक', 'स्वर संधि' तथा 'अर्थ की दृष्टि से वाक्य-भेद'** जैसे जटिल विषयों को हटाया गया है, वहीं भाषा की आधारभूत समझ को सुदृढ़ करने के लिए **'शब्द भंडार–(क) समानार्थी शब्द', 'मुहावरे', 'संज्ञा', 'सर्वनाम' और 'निपात'** जैसे महत्वपूर्ण व्याकरणिक बिंदुओं को सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तुत पूरक पाठ्यपुस्तक इसी शैक्षणिक बदलाव की पूर्ति हेतु तैयार की गई है। पूर्व में प्रकाशित मुख्य पाठ्यपुस्तक और वर्तमान पाठ्यक्रम के बीच के सेतु के रूप में यह पूरक पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए एक अनिवार्य संबल सिद्ध होगी।

इस पूरक पाठ्यपुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ:

अद्यतन सामग्री : इसमें केवल उन्हीं विषयों को स्थान दिया गया है, जिन्हें नवीन पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है (यथा–समानार्थी शब्द, मुहावरे, संज्ञा, सर्वनाम एवं निपात)।

सरल बोधगम्यता : व्याकरण के नियमों को रटने के स्थान पर उनके प्रयोगात्मक पक्ष पर बल दिया गया है, ताकि विद्यार्थी भाषा के शुद्ध रूप को आत्मसात कर सकें।

परीक्षा उपयोगी : अभ्यास हेतु दिए गए प्रश्न सी०बी०एस०ई० के नवीनतम मूल्यांकन मानकों को ध्यान में रखकर तैयार किए गए हैं।

हमारा विश्वास है कि यह संक्षिप्त किंतु सारगर्भित पूरक पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों में हिंदी भाषा के प्रति अभिरुचि जगाने और उन्हें परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु सक्षम बनाने में मील का पत्थर साबित होगी। हम उन सभी विशेषज्ञों और विद्वानों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं, जिनके परामर्श से इस सामग्री को अत्यंत अल्प समय में परिष्कृत रूप दिया जा सका।

सुझाव और प्रतिक्रियाएँ सादर आमंत्रित हैं।

–डॉ० उर्मिला गुप्ता

Suppliment Book.indb 2 4/9/2026 6:06:47 PM

पाठ्यक्रम

कक्षा-9वीं हिंदी 'ब' परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन

खंड		भारांक
'क'	अपठित बोध	14
'ख'	व्यावहारिक व्याकरण	16
'ग'	पाठ्यपुस्तक	30
'घ'	रचनात्मक लेखन	20
भारांक-80 (वार्षिक परीक्षा) +20 (आंतरिक परीक्षा)		

निर्धारित समय– 3 घंटे **भारांक– 80**

वार्षिक बोर्ड परीक्षा हेतु भार विभाजन				
खंड-'क' (अपठित बोध)				
क्र० सं०		**विषयवस्तु**	**उप भार**	**कुल भार**
1.	अपठित गद्यांश पर बोध, चिंतन, विश्लेषण, सराहना आदि पर बहुविकल्पीय, अतिलघूत्तरात्मक एवं लघूत्तरात्मक प्रश्न			14
		दो अपठित गद्यांश लगभग 200 शब्दों के। एक अंकीय तीन बहुविकल्पी प्रश्न (1×3=3) पूछे जाएँगे अतिलघूत्तरात्मक एवं लघूत्तरात्मक प्रश्न (2×2=4) पूछे जाएँगे।	7+7 =14	
	खंड-'ख' (व्यावहारिक व्याकरण)			
2.	व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषयवस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर अतिलघूत्तरात्मक एवं लघूत्तरात्मक प्रश्न। (1×16=16) (कुल 20 प्रश्न पूछे जाएँगे, जिनमें से केवल 16 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।)			16
	(i)	(क) शब्द भंडार समानार्थी शब्द–2 अंक (पाठ्यपुस्तक के आधार पर) (3 प्रश्नों में से 2 प्रश्न करने होंगे) (ख) मुहावरे–2 अंक (पाठ्यपुस्तक के आधार पर) (3 प्रश्नों में से 2 प्रश्न करने होंगे)	4	
	(ii)	शब्द-निर्माण उपसर्ग–2 अंक, प्रत्यय–2 अंक (5 प्रश्नों में से 4 प्रश्न करने होंगे)	4	
	(iii)	विराम-चिह्न–2 अंक (3 प्रश्नों में से 2 प्रश्न करने होंगे)	2	
	(iv)	संज्ञा–2 अंक, सर्वनाम-2 अंक, निपात–2 अंक (7 प्रश्नों में से 6 प्रश्न करने होंगे)	6	
3.		**खंड-'ग' (पाठ्यपुस्तक)**		**30**
4.		**खंड-'घ' (रचनात्मक लेखन)**		**20**
	लेखन			
	(i)	विभिन्न विषयों और संदर्भों पर विद्यार्थियों के तर्कसंगत विचार प्रकट करने की क्षमता को परखने के लिए संकेत-बिंदुओं पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 100 शब्दों में अनुच्छेद लेखन।	5	
	(ii)	अभिव्यक्ति की क्षमता पर केंद्रित अनौपचारिक दो विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 100 शब्दों में पत्र लेखन। (विकल्प सहित)	5	
	(iii)	दिए गए विषय/परिस्थिति के आधार पर लगभग 80 शब्दों में संवाद लेखन। (विकल्प सहित)	5	
	(iv)	किसी दृश्य/घटना के चित्र पर आधारित लगभग 80 शब्दों में लेखन। (बिना किसी विकल्प के)	5	

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान केंद्र द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के आधार पर जारी की गई पाठ्यपुस्तक के आधार पर साहित्य से संबंधित अध्ययन किया जाए।

विषय-सूची

खंड-ख—व्यावहारिक व्याकरण

1. अर्थ के आधार पर शब्द-भेद—समानार्थी शब्द 5

2. मुहावरे 12

● पाठ्यपुस्तक 'गंगा' में प्रयुक्त मुहावरों की सूची 22

3. संज्ञा 27

4. सर्वनाम 35

5. अव्यय या अविकारी शब्द : निपात 43

● पाठ्यपुस्तक 'गंगा' में प्रयुक्त उपसर्गों की सूची 47

● पाठ्यपुस्तक 'गंगा' में प्रयुक्त प्रत्ययों की सूची 50

1 अर्थ के आधार पर शब्द-भेद–समानार्थी शब्द (Synonyms Words)

अर्थ के आधार पर शब्दों के निम्नलिखित भेद किए जाते हैं–

1. समानार्थी या पर्यायवाची शब्द
2. विपरीतार्थी या विलोम शब्द
3. एकार्थी शब्द
4. अनेकार्थी शब्द
5. समरूपी भिन्नार्थी शब्द
6. समानार्थी प्रतीत होने वाले भिन्नार्थी शब्द
7. वाक्यांशों के अर्थों को व्यक्त करने वाले शब्द

○ **नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार इस कक्षा में मात्र समानार्थी शब्दों को ही सम्मिलित किया गया है। अतः हम यहाँ समानार्थी शब्दों के बारे में ही विस्तार से समझेंगे।**

समानार्थी शब्द

भाषा में शत-प्रतिशत समानार्थता नहीं होती। कोई शब्द जिस अर्थ को व्यक्त करता है, यदि दूसरा शब्द भी उसी अर्थ को शत-प्रतिशत व्यक्त करता तो भाषा ऐसे शब्दों को स्वीकार ही नहीं करेगी। वास्तव में, समानार्थी प्रतीत होने वाले शब्द, कुछ-न-कुछ अर्थ वैभिन्य लिए रहते हैं। निरंतर प्रयोग के दौरान अर्थ की इन छटाओं (different shades of the meanings) को लोग भूल जाते हैं और उन्हें हम पर्यायवाची वर्ग की सूची में डालते चले जाते हैं।

उदाहरण के लिए 'जल' तथा 'पानी' को ही लीजिए। दोनों शब्द निम्नलिखित संदर्भों में तो समानार्थी हैं क्योंकि प्यास लगने पर कोई भी व्यक्ति दोनों वाक्यों का प्रयोग कर सकता है–

1. मुझे एक गिलास **पानी** पिला दीजिए। 2. मेरे लिए एक गिलास **जल** ले आइए।

लेकिन हम हमेशा 'गंगा-जल' शब्द का प्रयोग करते हैं, 'गंगा-पानी' नहीं। हम यह कभी नहीं कहते कि 'मैंने सूर्य को एक लोटा **पानी चढ़ाया**' या 'इस तालाब का **जल** सड़ गया है।' कहने का तात्पर्य इतना ही है कि 'जल' शब्द के साथ पवित्रता का एक विशिष्ट अर्थ जुड़ा हुआ है जो 'पानी' शब्द के साथ नहीं है।

इसी तरह 'सुमन', 'कुसुम', 'पुष्प' तीनों ही शब्द 'फूल' के पर्यायवाची माने जाते हैं, किंतु संस्कृत में जब ये शब्द बने थे तब 'सुमन' पीले रंग के फूलों को; 'कुसुम' लाल रंग के फूलों को तथा 'पुष्प' सफ़ेद रंग के फूलों को कहा जाता था। धीरे-धीरे अर्थ के ये अंतर प्रयोग में दब गए और इन्हें समानार्थी या पर्यायवाची शब्दों की सूची में डाल दिया गया।

कहने का तात्पर्य यह है कि जिन शब्दों को समानार्थी या पर्यायवाची कहा जाता है, वे शत-प्रतिशत समानार्थी न होकर लगभग समानार्थी होते हैं। यदि किसी एक व्यक्ति के अनेक नाम हैं तो उनमें से एक नाम उस व्यक्ति की किसी एक विशेषता को प्रकट करता है तो दूसरा नाम किसी अन्य विशेषता को। एक अन्य उदाहरण से यह बात समझी जा सकती है। यह तो आप जानते ही हैं कि 'शिव' के लिए अनेक पर्यायवाची शब्द प्रचलित हैं; जैसे–शशि-शेखर, पिनाकी, त्रिपुरारि, गंगाधर, नीलकंठ आदि, किंतु ये सभी शब्द अर्थ की अलग-अलग छटाओं से युक्त हैं–

1. 'शशि-शेखर' वे शिव हैं जिनके मस्तक पर चंद्रमा (शशि) सुशोभित है।
2. 'पिनाकी' वे शिव हैं जिन्होंने पिनाक नामक धनुष को धारण किया हुआ है।
3. 'त्रिपुरारि' उस शिव का नाम है जो 'त्रिपुर' के अरि हैं।
4. 'गंगाधर' शिव का नाम इसलिए पड़ा क्योंकि उन्होंने गंगा को धारण किया है।
5. 'नीलकंठ' शिव को इसलिए कहा जाता है क्योंकि विष को अपने गले में धारण करने के कारण उनका कंठ नीला हो गया था।

इस तरह ये पाँचों शब्द भगवान शिव की पाँच अलग-अलग विशेषताओं की ओर संकेत करते हैं। अतः कहा जा सकता है कि ये सभी शत-प्रतिशत समानार्थी नहीं हैं। चूँकि सभी शब्द एक ही व्यक्ति (भगवान शिव) की ओर संकेत कर रहे हैं, अतः पर्यायवाची या समानार्थी मान लिए गए हैं।

Supplment Book.indb 5 4/9/2026 6:06:47 PM

कोई शब्द किसी अन्य शब्द का पर्यायवाची है या नहीं इस बात का निर्धारण आप निम्नलिखित आधारों पर कर सकते हैं–

1. भाषिक स्तर पर तथा भौतिक जगत के स्तर पर पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग समान अर्थ में किया जा सकता है। निम्न. लिखित वाक्यों पर ध्यान दीजिए–

   (क) **विभावरी** बीत गई, अब तो उठो। (ख) **रात्रि** बीत गई, अब तो उठो।

   'विभावरी' तथा 'रात्रि' दोनों शब्दों का प्रयोग (दोनों वाक्यों में) 'रात' के पर्याय रूप में इसलिए माना जा सकता है क्योंकि भाषिक संरचना के स्तर पर दोनों वाक्यों की संरचना समान है तथा भौतिक जगत में 'रात बीत जाने' का अर्थ व्यक्त कर रहे हैं, भले ही 'रात्रि' का अर्थ अंधकार वाली काली रात है तथा 'विभावरी' वह रात्रि है जो 'विभा' (चाँदनी) से युक्त है।

2. कुछ पर्यायवाची शब्दों में कुछ अंश समान होता है; जैसे–'देवेंद्र', 'देवराज', 'देवेश' तीनों शब्दों में 'देव' शब्द समान है अत: तीनों शब्द 'इंद्र' के पर्याय माने जा सकते हैं क्योंकि तीनों ही 'इंद्र' के लिए प्रयुक्त होते हैं।

3. पर्यायवाची शब्दों में आधारभूत अर्थपरक अंश की समानता होती है। उदाहरण के लिए, 'जलज', 'नीरज', 'वारिज', 'अंबुज', सभी शब्दों में एक ओर 'ज' प्रत्यय 'जन्म लेने वाला' के अर्थ में समान अंश तो है ही पर अर्थ के स्तर पर भी इनमें समानता है; जैसे–

   जलज = जल में जन्म लेने वाला अर्थात कमल।

   नीरज = नीर (जल) में जन्म लेने वाला अर्थात कमल।

   वारिज = वारि (जल) में जन्म लेने वाला अर्थात कमल।

   अंबुज = अंबु (जल) में जन्म लेने वाला अर्थात कमल।

   इस तरह उपर्युक्त सभी शब्द 'कमल' का समान अर्थ देने के कारण पर्यायवाची हैं।

4. कुछ पर्यायवाची शब्दों के विलोम रूप भी परस्पर पर्याय होते हैं। उदाहरण के लिए 'सम्मान' तथा 'आदर' पर्यायवाची हैं तथा इन शब्दों के विलोम शब्द 'असम्मान' तथा 'अनादार' भी लगभग समानार्थी होने के कारण पर्यायवाची हैं।

5. पर्यायवाची शब्द मोटे रूप से समान अर्थ का बोध कराते हैं; जैसे–'सूर्य तथा सूरज', 'महक और ख़ुशबू', 'सर्प और साँप' समानार्थी होने के कारण पर्यायवाची हैं।

   पर्यायवाची शब्द दो प्रकार के होते हैं–(क) पूर्ण पर्यायवाची शब्द तथा (ख) अपूर्ण पर्यायवाची शब्द।

   (क) पूर्ण पर्यायवाची शब्द–पूर्ण पर्याय शब्द वे शब्द हैं जिनका प्रयोग सभी संदर्भों में, उसी अर्थ में, एक-दूसरे के स्थान पर हो सकता है; जैसे–जलज, नीरज, वारिज शब्द पूर्ण पर्यायवाची कहे जा सकते हैं।

   (ख) अपूर्ण पर्यायवाची शब्द–अपूर्ण पर्याय शब्द वे शब्द हैं जो अर्थ की दृष्टि से कुछ-न-कुछ विशिष्टता रखते हैं और जिनका प्रयोग सभी संदर्भों में एक-दूसरे के स्थान पर नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए 'जल' और 'पानी' में से 'जल' शब्द का प्रयोग तो 'गंगा' के साथ 'गंगा-जल' के रूप में किया जा सकता है पर 'पानी' शब्द का प्रयोग 'गंगा-पानी' के रूप में नहीं किया जा सकता। अत: 'जल' और 'पानी' अपूर्ण पर्यायवाची शब्द कहे जाएँगे।

नीचे कुछ पर्यायवाची शब्दों की सूची दी जा रही है–

1. **अग्नि** – अनल, आग, पावक, ज्वाला, वह्नि।
2. **अनुपम** – अद्‌वितीय, अनोखा, अपूर्व, अद्‌भुत, निराला, अनूठा।

3. **अमृत** – पीयूष, सुधा, अमिय, सोम, अमी।
4. **अश्व** – घोड़ा, तुरंग, हय, वाजि, घोटक, सैंधव।
5. **अंधकार** – तिमिर, अंधेरा, तम, तमिस्र।
6. **अहंकार** – दंभ, घमंड, दर्प, अभिमान।
7. **अतिथि** – अभ्यागत, आगंतुक, मेहमान, पाहुना।
8. **आँख** – नेत्र, लोचन, दृग, चक्षु, नयन, विलोचन।
9. **आभूषण** – अलंकार, भूषण, गहना, ज़ेवर।
10. **आकाश** – आसमान, गगन, अंबर, नभ, अनंत, शून्य, व्योम।
11. **आनंद** – आमोद, प्रमोद, हर्ष, उल्लास, प्रसन्नता, खुशी।
12. **इंद्र** – सुरपति, देवेंद्र, सुरेंद्र, सुरेश, पुरंदर, महेंद्र, देवराज, देवेश।
13. **इच्छा** – अभिलाषा, आकांक्षा, मनोरथ, लालसा, कामना, चाह।
14. **ईश्वर** – भगवान, ईश, परमात्मा, प्रभु, जगन्नाथ, जगदीश, परमेश्वर, दीनबंधु।
15. **उन्नति** – उत्थान, विकास, प्रगति, उत्कर्ष, अभ्युदय।
16. **उद्यान** – बाग, बगीचा, फुलवारी, उपवन, वाटिका।
17. **कमल** – जलज, अंबुज, नीरज, पंकज, वारिज, अरविंद, सरसिज, नलिन, राजीव, सरोज।
18. **कपड़ा** – पट, वस्त्र, अंबर, वसन, चीर।
19. **कामदेव** – मदन, मनसिज, मनोज, विश्वकेतु, काम, पंचशर, रतिपति, अनंग।
20. **किरण** – अंशु, कर, रश्मि, मरीचि, मयूख।
21. **किनारा** – तट, तीर, कगार, कूल।
22. **कुबेर** – किन्नरेश, यक्षराज, धनंद, धनपति।
23. **कोयल** – कोकिला, पिक, श्यामा, वसंतदूत।
24. **कृष्ण** – श्याम, घनश्याम, कान्हा, केशव, माधव, वासुदेव, गोपाल, राधा-वल्लभ, मोहन, गिरिधर, मुरारि।
25. **गणेश** – गणपति, गजानन, गजवदन, विनायक, भवानीनंदन, विघ्नेश, लंबोदर, मोदकप्रिय, एकदंत।
26. **गंगा** – सुरसरिता, सुरसरि, देवनदी, भागीरथी, मंदाकिनी, अलकनंदा, त्रिपथगा।
27. **घर** – गृह, भवन, आलय, आवास, सदन, अयन, गेह, शाला, निकेतन, धाम।
28. **चतुर** – सयाना, कुशल, पटु, योग्य, निपुण, दक्ष, नागर, प्रवीण, होशियार।
29. **चंद्रमा** – चंद्र, शशि, हिमांशु, सुधांशु, विधु, राकेश, निशाकर, मयंक, इंदु, सोम, सुधाकर।
30. **चाँदनी** – ज्योत्स्ना, कौमुदी, चंद्रिका, अमृततरंगिणी।
31. **जल** – नीर, अंबु, तोय, वारि, पानी, पय, जीवन, सलिल।
32. **जमुना** – यमुना, सूर्यतनया, कालिंदी, रविसुता, रविनंदिनी, श्यामा।
33. **जंगल** – वन, कांतार, कानन, अरण्य, विपिन।
34. **तलवार** – खड्ग, असि, शमशीर, चंद्रहास, करवाल।
35. **तालाब** – सरोवर, सर, ताल, जलाशय, तड़ाग, पुष्कर।
36. **तारा** – नखत, उडु, नक्षत्र, तारिका, तारक।
37. **तीर** – बाण, शर, इषु, आशुग, शिलीमुख।
38. **दुख** – कष्ट, शोक, व्यथा, वेदना, पीड़ा, क्षोभ, विषाद।

Suppliment Book.indb 7 4/9/2026 6:06:47 PM

39. **दुर्गा** – भवानी, चंडी, चंडिका, काली, माता, कल्याणी, कामाक्षी।
40. **दुष्ट** – दुर्जन, अधम, नीच, खल, कुटिल।
41. **दूध** – दुग्ध, क्षीर, पेय, गोरस।
42. **दिन** – दिवस, वासर, वार, अह्न।
43. **देवता** – सुर, देव, अमर, निर्जर, आदित्य, विबुध।
44. **धन** – द्रव्य, दौलत, संपत्ति, वित्त, विभूति, अर्थ, मुद्रा, लक्ष्मी, श्री।
45. **नदी** – सरिता, तरंगिणी, सरित, निर्झरिणी, नद, आपगा, तटिनी।
46. **नरक** – यमपुर, यमालय, यमलोक, रौरव, संघात।
47. **नौकर** – सेवक, दास, परिचारक, अनुचर, भृत्य।
48. **नौका** – नाव, तरिणी, तरी, बेड़ा, पोत, जलयान।
49. **पक्षी** – खग, चिड़िया, द्विज, पतंग, अंडज, पखेरू, विहंग, विहग, नभचर।
50. **पहाड़** – पर्वत, गिरि, अचल, शैल, भूधर, नग, महीधर।
51. **पति** – कांत, स्वामी, नाथ, भर्ता, वल्लभ, बालम, साजन।
52. **पत्नी** – भार्या, दारा, गृहिणी, अर्धांगिनी, वधू, वामांगी, कलत्र, वामा, जीवनसंगिनी, प्रिया।
53. **पत्थर** – पाषाण, पाहन, उपल, प्रस्तर, अश्म।
54. **पवन** – समीर, वायु, हवा, बयार, अनिल, वात, मारुत।
55. **पार्वती** – उमा, भवानी, दुर्गा, अपर्णा, रुद्राणी, शिवा।
56. **पुत्र** – बेटा, लड़का, सुत, आत्मज, तनय, नंदन, लाल।
57. **पुत्री** – बेटी, लड़की, सुता, आत्मजा, तनया, कन्या, तनुजा।
58. **पुष्प** – फूल, सुमन, प्रसून, कुसुम, मंजरी।
59. **पत्ता** – पत्र, पर्ण, दल, पात, किसलय।
60. **पृथ्वी** – धरती, भूमि, भू, धरा, धरणी, वसुधा, वसुंधरा, जगती, धरित्री, अवनि।
61. **प्रकाश** – ज्योति, रोशनी, प्रभा, द्युति, छवि, चमक, उजाला।
62. **बाल** – केश, कच, कुंतल, चिकुर, अलक।
63. **बंदर** – वानर, कपि, शाखामृग, मर्कट, हरि।
64. **बादल** – घन, जलद, जलधर, मेघ, पयोद, वारिद, अंबुद, तोयद, पयोधर, नीरद।
65. **बालक** – बच्चा, शिशु, लड़का, शावक, बाल।
66. **ब्राह्मण** – द्विज, भूसुर, भूदेव, विप्र।
67. **बिजली** – विद्युत, तड़ित, चपला, चंचला, दामिनी, सौदामिनी।
68. **ब्रह्मा** – विधाता, प्रजापति, कर्ता, कर्तारि, अज, विरंचि, स्वयंभू, पितामह, लोकेश।
69. **भौंरा** – भ्रमर, मधुकर, मधुप, षट्पद, अलि, भृंग, भँवर, द्विरेफ।
70. **महादेव** – शंकर, शिव, भूतनाथ, त्रिपुरारि, महेश्वर, चंद्रशेखर, भूतेश, वामदेव, त्रिलोचन, गौरीपति, कैलाशपति।
71. **मनुष्य** – मानव, नर, मनुज, आदमी, मर्त्य, इनसान।
72. **मीन** – मछली, मत्स्य, मकर, अंडज, झष।
73. **मित्र** – दोस्त, सखा, सहचर, मीत।
74. **मदिरा** – मद्य, सुरा, शराब, मधु।

Supplment Book.indb 8 4/9/2026 6:06:47 PM

75. **मधु** – वसंत, कुसुमाकर, ऋतुराज, माधव।
76. **मृत्यु** – निधन, मरण, मौत, देहावसान, शरीरांत।
77. **माता** – अम्बा, अम्बिका, माँ, धात्री, जननी।
78. **यमराज** – यम, धर्मराज, हरि, जीवनपति, सूर्यपुत्र।
79. **युद्ध** – लड़ाई, रण, संग्राम, संघर्ष, समर।
80. **राजा** – नृप, नरेश, प्रजापति, भूप, महीपति, सम्राट।
81. **रावण** – दशानन, दशग्रीव, दशकंध, दशकंठ, लंकेश।
82. **रात्रि** – रात, रैन, निशा, रजनी, यामिनी, तमसा, विभावरी।
83. **राक्षस** – असुर, निशाचर, दैत्य, दानुज, दानव, रजनीचर, तमीचर।
84. **लक्ष्मी** – कमला, रमा, विष्णुप्रिया, हरिप्रिया, इंदिरा।
85. **वृक्ष** – पेड़, पादप, विटप, द्रुम, तरु।
86. **विष्णु** – केशव, जनार्दन, नारायण, माधव, गोविंद, पीतांबर, लक्ष्मीपति, कमलापति, रमापति, विधु, अच्युत।
87. **समुद्र** – सागर, सिंधु, जलधि, नीरधि, अंबुधि, वारिधि, पयोधि, नीरनिधि।
88. **सरस्वती** – शारदा, वागेश्वरी, भारती, भाषा, वाणी, इला, महाश्वेता।
89. **संसार** – विश्व, जगत, दुनिया।
90. **सुगंध** – सौरभ, सुरभि, खुशबू, महक, सुवास, गंध।
91. **सौंदर्य** – शोभा, सुषमा, सुंदरता।
92. **साँप** – सर्प, नाग, अहि, भुजंग, विषधर, पन्नग, व्याल।
93. **सूर्य** – सूरज, दिनकर, दिवाकर, प्रभाकर, रवि, हंस, आदित्य, दिनेश, भानु, भास्कर, पतंग, अर्क।
94. **सेना** – दल, चमू, कटक, अनीक, फौज, वाहिनी।
95. **समूह** – झुंड, टोली, गण, दल, पुंज, वृंद, समुदाय।
96. **सिंह** – शेर, हरि, केसरी, वनराज, मृगराज, मृगेन्द्र, मृगपति।
97. **सोना** – स्वर्ण, कनक, कंचन, हेम, सुवर्ण, कुंदन।
98. **स्त्री** – नारी, अबला, कांता, रमणी, कामिनी, सुंदरी, महिला, औरत, वामा, वनिता।
99. **सुंदर** – खूबसूरत, चारु, मनोहर, ललित, कमनीय, रमणीक।
100. **शरीर** – तन, देह, तनु, वपु, काया, गात।
101. **स्वर्ग** – देवलोक, इंद्रलोक, सुरलोक, दिव, नाक।
102. **शत्रु** – दुश्मन, रिपु, वैरी, अरि, अराति।
103. **शोभा** – कांति, छटा, प्रभा, द्युति, सुषमा, विभा, आभा।
104. **हाथ** – कर, पाणि, हस्त।
105. **हाथी** – हस्ती, गज, नाग, दंती, द्विप, करी, कुंभी, कुंजर, गंयद।

ध्यान देने योग्य बातें

- जो शब्द लगभग एक समान अर्थ व्यक्त करते हैं, उन्हें समानार्थी शब्द या पर्यायवाची शब्द कहते हैं।
- पर्यावाची शब्द दो प्रकार के होते हैं–1. पूर्ण पर्यायवाची शब्द 2. अपूर्ण पर्यायवाची शब्द।

अभ्यास-कार्य

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो समानार्थी शब्द लिखिए।

(क) अंग ....

(ख) अहंकार ....

(ग) इच्छा ....

(घ) किसान ....

(ङ) चाँदनी ....

(च) झरना ....

(छ) दाँत ....

(ज) दुर्गा ....

(झ) नरक ....

(ञ) पत्थर ....

(ट) पक्षी ....

(ठ) सवेरा ....

(ड) हिमालय ....

(ढ) सोना ....

(ण) कोष ....

(त) शरीर ....

(थ) उन्नति ....

(द) पथिक ....

(ध) तलवार ....

(न) बिजली ....

(प) बुद्धि ....

(फ) स्त्री ....

2. रेखांकित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखकर रिक्त स्थान पूरे कीजिए।

(क) राह कितनी भी कठिन हो, समझदार लोग .... निकाल ही लेते हैं।

(ख) सिंह पर बैठी हुई दुर्गा को .... भी कहते हैं।

(ग) स्त्री घर की मालकिन होती है इसीलिए .... कहलाती है।

(घ) बरसात में नदी-नालों का पानी गंगा में जाकर गंगा के .... में मिल जाता है।

(ङ) साक्षात् मृत्यु को देखकर भी वीरों को .... से डर नहीं लगता।

(च) कालिंदी, ... नदी का दूसरा नाम है।

(छ) जिन मेहमानों के आने की तिथि निश्चित नहीं होती थी, उनको .... कहा जाता था।

(ज) पर्वतों का राजा होने के कारण हिमालय को .... कहते हैं।

(झ) चिड़ियाघर शब्द के 'चिड़िया' शब्द का अर्थ है– .... ।

(ञ) कल्पवृक्ष देवताओं का वृक्ष माना जाता है, इसलिए उसे .... भी कहते हैं।

3. कोष्ठक से उचित समानार्थी शब्द का चयन कर वाक्यों के रिक्त स्थानों को पूरा कीजिए।

(क) दीपक जलते ही कमरे में .... फैल गया। (रोशनी/प्रकाश)

(ख) साइकिल से नीचे गिरने के कारण उसका प्रत्येक .... दुख रहा है। (शरीर/अंग)

(ग) हमलोग .... रात में नौका विहार के लिए गए। (चंद्रिका/चाँदनी)

(घ) महात्मा गांधी का .... गुजरात में हुआ था। (आविर्भाव/जन्म)

(ङ) देखते-ही-देखते दोनों देशों के बीच .... प्रारंभ हो गई। (युद्ध/लड़ाई)

(च) .... रावण बुराई का प्रतीक है। (लंकापति/दशानन)

(छ) अपने देश में सतपुड़ा के घने .... बहुत प्रसिद्ध हैं। (कानन/जंगल)

(ज) महानगरों में अनेक .... चुंबी इमारतें होती हैं। (गगन/अंबर)

(झ) गरमी की छुट्टियों में दोस्तों ने .... विहार का कार्यक्रम बनाया था। (किश्ती/नौका)

(ञ) एकाएक ज़ोर से .... चमकी और मेरी बहन डर गई। (बिजली/विद्युत)

Supplment Book.indb 10 4/9/2026 6:06:47 PM

(ट) सुदामा कृष्ण के बाल .... थे।

(सखा/सहचर)

(ठ) .... भारत के उत्तर में विराजमान है।

(हिमालय/गिरीश)

4. निम्न समानार्थी शब्दों के लिए एक अन्य समानार्थी शब्द लिखिए।

(क) सुरनदी, देवनदी – ....

(ख) नौका, नैया – ....

(ग) केश, कुंतल – ....

(घ) ऋतुराज, मधु – ....

(ङ) वाहिनी, फौज – ....

(च) मानव, नर – ....

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. समानार्थी शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।
2. क्या एक समानार्थी शब्द के स्थान पर दूसरे समानार्थी शब्द का प्रयोग हमेशा किया जा सकता है? स्पष्ट कीजिए।
3. 'जल' और 'पानी' एक-दूसरे के समानार्थी शब्द हैं, फिर भी हम 'गंदे नाले का जल' क्यों नहीं कहते? तर्क दीजिए।
4. 'नीर' के समानार्थी शब्दों से जल और बादल के समानार्थी शब्द कैसे बनते हैं? इस प्रक्रिया के पीछे के तर्क को स्पष्ट कीजिए।
5. निम्नलिखित समानार्थी शब्दों का वाक्य में प्रयोग करते हुए इनका अर्थ एवं अंतर स्पष्ट कीजिए।

(क) निर्मल और स्वच्छ – ....

(ख) निधन और मौत – ....

(ग) अभिमान और गर्व – ....

■■■

Suppliment Book.indb 11 4/9/2026 6:06:47 PM

2 मुहावरे (Idioms)

जब कोई वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाता है तो उसे **मुहावरा** कहा जाता है, जैसे–

(*i*) महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी के युद्ध में अकबर की मुगल सेना के **दाँत खट्टे कर दिए थे।**

(*ii*) वह तो **काठ का उल्लू** है, कोई भी बात उसकी समझ में आने वाली नहीं है।

उपर्युक्त प्रथम वाक्य में 'दाँत खट्टे कर दिए' का अर्थ खट्टी चीज़ खिलाकर दाँत खट्टे कर दिए जाने से नहीं है, बल्कि इस वाक्यांश का प्रयोग 'बुरी तरह हरा देने' के लिए किया गया है। इसी प्रकार, दूसरे वाक्य में 'काठ का उल्लू' से तात्पर्य 'काठ अर्थात लकड़ी के बने उल्लू' से न होकर 'मूर्ख व्यक्ति' से है।

मुहावरे और लोकोक्ति का प्रयोग उसके मूल रूप में किया जाता है, उसका अर्थ प्रयुक्त नहीं किया जाता।

मुहावरा वह वाक्यांश है जो अपने सामान्य अर्थ से भिन्न कोई विशेष या लाक्षणिक अर्थ प्रकट करता है। इसका प्रयोग कभी वाक्य के आरंभ में, कभी बीच में और कभी अंत में किया जाता है जबकि लोकोक्ति एक संपूर्ण अर्थगर्भित वाक्य है, जो लोकजीवन की किसी सच्ची घटना या सीख पर आधारित होती है। मुहावरे और लोकोक्ति के प्रयोग से भाषा-सौष्ठव और अर्थ प्रभाव बढ़ जाता है।

मुहावरे : उदाहरण–अर्थ और प्रयोग

1. **अक्ल पर पत्थर पड़ना** (बुद्धि से काम न लेना)–बुरे दिन आने पर मनुष्य की अक्ल पर पत्थर पड़ जाते हैं।
2. **अपना उल्लू सीधा करना** (अपना मतलब निकालना)– दुकानदारों को अपना उल्लू सीधा करने से मतलब है, किसी के लाभ-हानि से उन्हें कोई लेना-देना नहीं है।
3. **अपना-सा मुँह लेकर रह जाना** (लज्जित होना)–जब किसी ने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया, तब वह अपना-सा मुँह लेकर रह गया।
4. **अपनी खिचड़ी अलग पकाना** (साथ मिलकर न रहना)–भारत के विपक्षी दल अपनी खिचड़ी अलग पकाते हैं।
5. **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना** (अपनी प्रशंसा स्वयं करना)–अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने से क्या लाभ है? अच्छा काम करोगे, तो लोग प्रशंसा करेंगे।
6. **अंगारे उगलना** (क्रोध में कठोर वचन बोलना)–क्रिकेट खेलते बच्चों ने वर्मा जी के मकान का शीशा तोड़ डाला तो वे अंगारे उगलने लगे।
7. **आँखें चुरा लेना** (अनदेखा कर देना)–मित्र को मुसीबत में पड़ा देखकर स्वार्थी मित्र उससे आँखें चुरा लेते हैं।
8. **आँखें बिछाना** (बहुत आदर-सम्मान करना)–सुदामा को अपने द्वार आया देख भगवान कृष्ण ने उसके स्वागत में आँखें बिछा दीं।
9. **अँगूठा दिखाना** (समय पड़ने पर मना कर देना)–अपने मित्र रमेश से मैंने सौ रुपये एक सप्ताह के लिए उधार माँगे, पर उसने अँगूठा दिखा दिया।
10. **अक्ल का दुश्मन** (मूर्ख व्यक्ति)–राजेश को समझाने का क्या लाभ? यह तो अक्ल का दुश्मन है।
11. **अँधेरे घर का उजाला** (इकलौता पुत्र)–वैभव ने अपने भाई के पुत्र दीपू को गोद ले लिया है। अब तो उस अँधेरे घर का यही एक उजाला है।
12. **अंधे की लाठी** (एकमात्र सहारा)–श्रवण कुमार अपने माता-पिता की अंधे की लाठी था।
13. **अक्ल चरने जाना** (बुद्धिहीनता का काम करना)–मेरी तो अक्ल चरने चली गई थी जो तुम्हे पैसे उधार दिए।

Supplment Book.indb 12 4/9/2026 6:06:47 PM

14. **आकाश-पाताल एक करना** (बहुत परिश्रम करना)–उसने अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए आकाश-पाताल एक कर दिया। उसी का परिणाम है कि आज यह लाखों में खेल रहा है।
15. **आसमान सिर पर उठाना** (बहुत शोर करना)–अध्यापक की अनुपस्थिति में विद्‌यार्थी आसमान सिर पर उठा लेते हैं।
16. **आड़े हाथों लेना** (खरी-खरी सुनाना)–रमेश के घर देर से पहुँचने पर उसके पिता जी ने उसे आड़े हाथों लिया।
17. **आकाश से बातें करना** (बहुत ऊँचा होना)–हिमालय की चोटियाँ तो आकाश से बातें करती हैं।
18. **आँसू पोंछना** (धीरज दिलाना)–उमेश के पिता के मरने के पश्चात् जनेश्वर ही उसके आँसू पोंछने वाला रह गया है।
19. **आपे से बाहर होना** (क्रोध से सुध-बुध खो बैठना)–छोटी-छोटी बातों पर आपे से बाहर होना अच्छी बात नहीं है।
20. **आँखों में धूल झोंकना** (धोखा देना)–पढ़ाई के नाम पर दिन भर मोबाइल में गेम खेलकर मनोज अपने माता-पिता की आँखों में घूल झोंक रहा है।
21. **आँखों से गिरना** (सम्मान घटना)–अपने कुकृत्यों के कारण वह अपने बड़ों की आँखों से गिर गया है।
22. **आँखें तरसना** (किसी को देखने की तीव्र इच्छा होना)–तुम कहाँ चले गए थे? तुम्हें देखने को मेरी तो आँखें ही तरस गईं।
23. **आँखें खुलना** (होश आना)–जब वैभव ने सब कुछ जुए में लुटा दिया, तब कहीं जाकर उसकी आँखें खुलीं।
24. **आँखें दिखाना** (क्रोध करना)–एक तो कुर्सी तोड़ दी और ऊपर से आँखें दिखाते हो?
25. **आँखें चार होना** (दोनों का एक-दूसरे को देखना)–पिता से आँखें चार होते ही चोर मारे शर्म के ज़मीन में गड़ गया।
26. **आँखें पथरा जाना** (राह देखते बहुत थक जाना)–सीमा पर तैनात पति की प्रतीक्षा करते-करते पत्नी की आँखें पथरा गईं।
27. **आँखें उठाना** (बुरी दृष्टि से देखना)–यदि तुमने मेरी ओर आँख उठाकर भी देखा, तो तुम्हारी खैर नहीं।
28. **आँखों पर पर्दा पड़ना** (धोखा खाना)–धृतराष्ट्र की आँखों पर ऐसा पर्दा पड़ा था कि उसको अपने-राजधर्म का भी ज्ञान न रहा।
29. **आँखों का तारा होना** (बहुत ही प्यारा लगना)–लव और कुश दोनों ही माता सीता की आँखों के तारे थे।
30. **आग-बबूला होना** (बहुत क्रोध करना)–इसमें आग-बबूला होने की क्या बात है, यह लो अपनी पुस्तक।
31. **आस्तीन का साँप** (कपटी मित्र)–तुम्हारा भाई ही तुम्हारे लिए आस्तीन का साँप बना हुआ है। हर जगह तुम्हारी निंदा करता है।
32. **आकाश-पाताल का अंतर होना** (बहुत अधिक अंतर)–महेश और मोहन के चरित्र में आकाश-पाताल का अंतर है, तो भी दोनों में गहरी मित्रता है।
33. **आग में घी डालना** (क्रोध को भड़काना)–क्रोध में जलते परशुराम को लक्ष्मण ने खरी-खोटी सुनाकर और आग में घी डाल दिया।
34. **आँखें फेरना** (परवाह न करना)–काम निकलते ही आँखें फेर लेना स्वार्थी लोगो की आदत है।
35. **इधर-उधर की हाँकना** (व्यर्थ की गप्पे मारना)–सरिता की कोई भी बात सच्ची नहीं होती। वह तो इधर-उधर की हाँकती रहती है।
36. **ईंट का जवाब पत्थर से देना** (दुष्ट की दुष्टता से बढ़-चढ़कर दुष्टता करना)–इस बार यदि तुमने मुझ पर हमला किया तो ईंट का जवाब पत्थर से दूँगा।
37. **ईद का चाँद होना** (बहुत दिनों बाद दिखाई देना)–काफी दिन के बाद मिले हो भाई, तुम तो बस ईद के चाँद हो गए हो।
38. **ईंट से ईंट बजाना** (नष्ट करना)–युद्ध में भारत ने ईंट से ईंट बजा दी।
39. **उल्लू बनाना** (मूर्ख बनाना)–चतुर लोग भोले-भाले लोगों को उल्लू बनाकर ठग लेते हैं।
40. **उन्नीस-बीस का अंतर होना** (बहुत थोड़ा अंतर होना)–इन दोनों जुड़वाँ भाइयों में तो उन्नीस-बीस का ही अंतर है।

Supplment Book.indb 13 4/9/2026 6:06:47 PM

41. **उल्टी गंगा बहाना** (विपरीत काम करना)–भ्रष्टाचारियों से क्षमा माँगकर उलटी गंगा क्यों बहा रहे हैं?
42. **उँगली पर नचाना** (अच्छी तरह वश में करना)–रामप्रवेश की पत्नी उसे उँगली पर नचाती है।
43. **उँगली उठाना** (दोष निकालना)–ईमानदार व्यक्तियों पर कोई उँगली नहीं उठा सकता।
44. **उड़ती चिड़िया पहचानना** (बहुत अनुभवी होना)–पुलिस वालों से कोई अपराधी नहीं बच सकता, वे तो उड़ती चिड़िया पहचानते हैं।
45. **ऊँट के मुँह में जीरा** (अधिक खाने वाले को कम देना)–पहलवान को नाश्ते में दो समोसे देना ऊँट के मुँह में जीरा देना है।
46. **एक आँख से देखना** (समान दृष्टि से देखना)–भारतीय संविधान सभी धर्मों को एक आँख से देखता है।
47. **एक ही लकड़ी से हाँकना** (सबसे एक जैसा व्यवहार करना)–तुम्हें अच्छे-बुरे की पहचान ही नहीं है। सबको एक ही लकड़ी से हाँकते हो।
48. **एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना** (बहुत प्रयत्न करना)–परीक्षा में अच्छी श्रेणी लाने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना पड़ता है।
49. **एक ही थैले के चट्टे-बट्टे** (एक जैसे)–यहाँ किस पर विश्वास किया जाए, सभी राजनीतिज्ञ एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।
50. **कलेजा मुँह को आना** (बहुत दुखी होना)–विधवा की करुण कथा सुनकर मेरा कलेजा मुँह को आ गया।
51. **कान पर जूँ न रेंगना** (तनिक भी असर न पड़ना)–माता-पिता ने पुत्र को बहुत समझाया, पर उसके कानों पर जूँ तक न रेंगी।
52. **कान भरना** (चुगली करना)–ईर्ष्यालु और चापलूस लोग सदा किसी-न-किसी के विरुद्ध अधिकारियों के कान भरते रहते हैं।
53. **कीचड़ उछालना** (दूसरों का निरादर करना)–चुनाव में एक पार्टी दूसरी पार्टी पर कीचड़ उछालती है।
54. **कोल्हू का बैल होना** (दिन-रात काम में जुटे रहना)–दिन भर कोल्हू के बैल की तरह मेहनत करने के बाद भी लोगों को सुख प्राप्त नहीं हो पाता।
55. **कलेजा ठंडा होना** (संतोष होना)–जिस दिन मैं उससे अपनी बेइज्जती का बदला ले लूँगा, उसी दिन मेरा कलेजा ठंडा होगा।
56. **कलेजे पर साँप लोटना** (ईर्ष्या से जलना)–जब से में भारतीय प्रसनयनिक सेना परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ हूँ, मेरे पड. ़ोसियों के कलेजे पर साँप लोटने लगा है।
57. **काया पलट होना** (बिलकुल बदल जाना)–जबसे वह मुंबई गया है, उसकी तो काया पलट हो गई है।
58. **ख़ून खौलना** (जोश में आना)–जलियाँवाला बाग नरसंहार की घटना के बाद पूरे भारतवर्ष के लोगों का खून खौल उठा।
59. **ख़ून का घूँट पीकर रह जाना** (गुस्सा सहन कर लेना)–एक उदंड व्यक्ति द्वारा अपमानित होने पर राम खून का घूँट पीकर रह गया।
60. **खटाई में पड़ना** (कुछ भी निश्चय तथा निर्णय न होना)–विपक्षी दलों के विरोध के कारण इस बिल का पेश होना खटाई में पड़ा हुआ है।
61. **खरी-खोटी सुनाना** (बुरे वचन कहना)–कक्षा में शोर मचाने के कारण अरुण को शिक्षक की खरी-खोटी सुननी पड़ी।
62. **खाक छानना** (मारे-मारे फिरना)–यदि तुमने यह नौकरी भी छोड़ दी तो याद रखो, फिर जन्म भर खाक छननी पड़ेगी।
63. **खाक में मिलाना** (नष्ट करना)–नादिरशाह ने दिल्ली के वैभव को खाक में मिला दिया।
64. **गागर में सागर भरना** (थोड़े शब्दों में बहुत कुछ कह देना)–मुख्य अतिथि ने अपने व्याख्यान में गागर में सागर भर दिया।

Supplment Book.indb 14 4/9/2026 6:06:47 PM

65. **गाँठ बाँधना** (अच्छी तरह याद रखना)–महात्मा गांधी की स्वावलंबन की विचारधारा को हमे गाँठ बाँध लेनी चाहिए।
66. **घाव हरा होना** (भूला दुख याद आना)–मेरी दुखती रग पर हाथ रखकर क्यों मेरा घाव हरा कर रहे हो?
67. **घी के दीये जलाना** (खुशी मनाना)–भारत के स्वतंत्र होने पर जनता ने घी के दीये जलाए।
68. **घोड़े बेचकर सोना** (गहरी नींद में सोना)–परीक्षा खत्म हो जाने के बाद तो विद्यार्थी घोड़े बेचकर सोते हैं।
69. **चल बसना** (परलोक सिधारना)–अंग्रेजों ने लाला लाजपत राय जी पर ऐसी लाठियाँ बरसाई कि वे इस संसार से ही चल बसे।
70. **चिराग तले अँधेरा होना** (महत्वपूर्ण स्थान के समीप अपराध का पनपना)–कल रात थाने के पास ही अपराधियों ने एक व्यवसायी को लूट लिया। ठीक ही कहा गया है, चिराग तले अँधेरा होता ही है।
71. **चादर के बाहर पैर पसारना** (आय से अधिक व्यय करना)–चादर से बाहर पैर मत पसारो, वेतन से कम व्यय करो।
72. **चुल्लू भर पानी में डूब मरना** (शर्म महसूस करना)–बाप बेचारा मुश्किल से कमाकर लाता है और तुम शराब पी रहे हो। चुल्लू भर पानी में डूब मरो।
73. **चूड़ियाँ पहनना** (कायर बनना)–यदि वीर पुरुष भी विपत्ति में देश की रक्षा नहीं कर सकते तो उन्हें चूड़ियाँ पहन लेनी चाहिए।
74. **चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना** (डर जाना)–चोरी का भेद खुलते देख चोर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।
75. **चिकना घड़ा होना** (निर्लज्ज होना, जिस पर कहने-सुनने का कुछ असर न हो)–जो लोग चिकना घड़ा होते हैं, उन पर किसी की सीख का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
76. **छक्के छुड़ाना** (बुरी तरह हराना)–महाराज शिवाजी ने अनेक बार मुगल सेना के छक्के छुड़ा दिए।
77. **जले पर नमक छिड़कना** (दुखी को और भी दुखी करना)–तुम क्यों इस गरीब बुढ़िया की लाठी छीनकर इसके जले पर नमक-छिड़क रहे हो?
78. **ज़हर का घूँट पीना** (अपमान सहन करना)–औरंगजेब द्वारा अपमानित होने पर शिवाजी ज़हर का घूँट पीकर रह गए।
79. **जान के लाले पड़ना** (विपत्ति में फँसना)–विमान में तकनीकी खराबी जाने के कारण यात्रियों की जान के लाले पड़ गए।
80. **टका-सा जवाब देना** (साफ़ इंकार कर देना)–आज ही तो मैंने अपने एक मित्र से एक पुस्तक माँगी थी, परंतु उसने मुझे टका-सा जवाब दे दिया।
81. **टाँग अड़ाना** (विघ्न डालना)–तू उनके कामों में टाँग क्यों अड़ाता है?
82. **ठोकरें खाना** (भूल के कारण कष्ट उठाना)–यदि पढ़ाई ठीक से किए होते तो ठोकरें न खानी पड़तीं।
83. **डंका बजाना** (प्रभाव होना)–सिंहगढ़ जीतने से सारे भारत में शिवाजी का डंका बजने लगा।
84. **डींग मारना/हाँकना** (अपनी झूठी प्रशंसा करना)–वह अपनी बहादुरी की डींगें मारता है, पर है पूरा कायर।
85. **डूब मरना** (बहुत लज्जित होना)–यदि इस बार भी तुम परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हुए तो तुम्हें कहीं जाकर डूब मरना चाहिए।
86. **तलवे चाटना** (चापलूसी करना)–कुछ कर्मचारी आजकल अधिकारियों के तलवे चाटने में ही लगे रहते हैं।
87. **तिल का ताड़ बनाना** (छोटी बात को बढ़ाकर बड़ी बनाना)–कल्पना ने तो जरा-सी बात को लेकर तिल का ताड़ बना दिया।
88. **थाली का बैंगन** (सिद्धांतहीन व्यक्ति)–आजकल के नेता थाली के बैंगन हैं। जिधर मंत्री पद मिलेगा, उधर ही भागेंगे।
89. **दंग रह जाना** (आश्चर्य में पड़ जाना)–आजकल वैज्ञानिकों के नवीनतम आविष्कारों को देखकर मनुष्य दंग रह जाता है।
90. **दबे पाँव निकल जाना** (चुपचाप चले जाना)–जैसे ही चोरों को पुलिस के आने की खबर मिली, वे दबे पाँव निकल भागे।

91. **दम घुटना** (साँस लेने में कठिनाई होना)–रेलगाड़ी में इतनी भीड़ थी कि हवा के बिना हमारा तो दम घुटने लगा।
92. **दाल न गलना** (वश न चलना)–तुम यहाँ से चले आओ। अब तुम्हारी यहाँ दाल न गलेगी।
93. **दाँत खट्टे करना** (हराना, नीचा दिखाना)–कारगिल के युद्ध में भारतीय सेना ने सभी मोर्चों पर पाकिस्तानी सेना के दाँत खट्टे कर दिए।
94. **दाँतों तले उँगली दबाना** (चकित रह जाना)–झाँसी की रानी की वीरता की गाथा सुनकर सभी दाँतों तले उँगली दबा लेते हैं।
95. **दाल में काला होना** (संदेह होना)–दूध वाला गाय दुहने के समय लोटा में पानी लेकर बैठा है, अवश्य ही दाल में कुछ काला है।
96. **दिन फिरना** (भाग्य पलटना)–समय आने पर किसी के दिन फिरते देर नहीं लगती।
97. **दो टूक जवाब देना** (साफ़-साफ़ जवाब देना)–मैंने शंकर से 100 रुपए उधार माँगे, मगर उसने दो टूक जवाब दे दिया कि मेरे पास हैं ही नहीं।
98. **दुम दबाकर भागना** (डरकर भाग जाना)–पुलिस के आने सी खबर सुनते ही चोर दुम दबाकर भाग गए।
99. **दो दिन का मेहमान होना** (मृत्यु निकट होना)–प्रमोद के दादा जी की उखड़ती हुई साँसें बता रही हैं कि अब वे दो दिन के मेहमान हैं।
100. **धज्जियाँ उड़ाना** (दुर्गति करना, दोष निकालना)–विधान सभा में विपक्षी दल के सदस्यों ने सरकार के प्रस्ताव की धज्जियाँ उड़ा दीं।
101. **धाक जमाना** (रोब जमाना, प्रभाव जमाना)–सम्राट अशोक ने थोड़े समय में ही सारे भारतवर्ष में अपनी धाक जमा ली थी।
102. **धूप में बाल सफ़ेद न करना** (बहुत अनुभवी होना)–पिता ने पुत्र से कहा–मुझे बिक्री-कर के बारे में क्या बताना चाहते हो? मैंने यूँ ही धूप में बाल सफ़ेद नहीं किए।
103. **नमक-मिर्च लगाना** (तनिक-सी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना)–समाचार-पत्र किसी भी बात को नमक-मिर्च लगाकर छापते हैं।
104. **नाक कटना** (इज़्ज़त जाना)–अपराधिक चरित्र वाले पुत्र के कारण समाज में उसकी भी नाक कट गई।
105. **नाक में दम करना** (सताना, तंग करना)–शिवाजी ने युद्ध में मुगलों की नाक में दम कर दिया था।
106. **नानी याद आ जाना** (होश ठिकाने आना)–मास्टर जी ने शरारती कौशल की ऐसी पिटाई की कि उसे नानी याद आ गई।
107. **नाक में नकेल डालना** (अच्छी तरह से वश में करना, नियंत्रित करना)–ईमानदार अधिकारी ने अपराधियों की नाक में नकेल डाल रखा है।
108. **नाम कमाना** (यश प्राप्त करना)–बोर्ड की परीक्षा में पूरे जिले में अव्वल आकर सीमा ने नाम कमाया।
109. **नाक रगड़ना** (खुशामद करना)–उस गरीब ने अखिलेश के सामने बहुत नाक रगड़ी, पर वह नहीं माना।
110. **नीचा दिखाना** (घमंड तोड़ना)–भारत ने चीन को 1962 में नेफा में ऐसे नीचा दिखाया कि वे आजीवन याद रखेंगे।
111. **नींद हराम होना** (व्यर्थ जागना, परेशान होना)–किसी भी उत्सव में ऊँची आवाज में लोग लाउडस्पीकर पर गाने बजाते हैं, जिससे हमारी नींद हराम हो जाती है।
112. **नाक-भौं सिकोड़ना** (घृणा प्रकट करना)–दूध के नाम पर आजकल के बच्चे नाक-भौं सिकोड़ने लगते हैं।
113. **पट्टी पढ़ाना** (बहका देना, बुरी सलाह देना)–मंथरा ने कैकेयी को ऐसी पट्टी पढ़ाई कि वह श्रीराम को वनवास देने के हठ पर अड़ी रही।
114. **पहाड़ टूट पड़ना** (भारी विपत्ति आना)–नौजवान बेटे की मृत्यु होते ही बूढ़े बाप पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा।
115. **पगड़ी उतारना** (अपमान करना)–मज़बूर लोगों की पगड़ी उतारने वालों को अंत में पछताना पड़ता है।

Suppliment Book.indb 16 4/9/2026 6:06:47 PM

116. **पत्थर का कलेजा होना** (कठोर हृदय होना)–बाप होकर भी तुम्हारा तो बिलकुल ही पत्थर का कलेजा है, जो बालक के इतना गिड़गिड़ाने पर भी नहीं पसीजता।

117. **पत्थर की लकीर होना** (अटूट होना)–यदि मैंने तुम्हारा काम करने का वचन दिया है तो वह अवश्य करूँगा। यह बात पत्थर की लकीर समझो।

118. **पाँचों अँगुलियाँ घी में होना** (लाभ-ही-लाभ होना)–आजकल आयात-निर्यात का व्यापार करनेवालों की तो पाँचों अँगुलियाँ घी में हैं।

119. **पानी फेरना** (समाप्त कर देना)–बुरी संगति में पड़कर प्रदीप ने अपने माता-पिता की आशाओं पर पानी फेर दिया।

120. **पापड़ बेलना** (कष्ट से जीवन व्यतीत करना)–बहुत पापड़ बेलने के पश्चात अब जाकर बेचारे सुजीत को नौकरी मिली है।

121. **पाँव ज़मीन पर न पड़ना** (बहुत खुश होना)–परीक्षा में उत्तीर्ण होने की खबर सुनकर खुशी के मारे उसके पाँव ज़मीन पर नहीं पड़ते थे।

122. **पाला पड़ना** (वास्ता पड़ जाना)–किस मूर्ख से पाला पड़ा है, कितना ही समझा लो कुछ समझता ही नहीं।

123. **प्राण हथेली पर लिए फिरना** (जान की परवाह न करना)–भारत की आज़ादी के दिवाने सदैव प्राण हथेली पर लिए फिरते थे, वे अंग्रेजों से कभी नहीं घबराए।

124. **पानी-पानी होना** (अत्यंत लज्जित होना)–मैंने जब अपने भाई को जुआ खेलते देखा, तो वह पानी-पानी हो गया।

125. **पाँव उखड़ जाना** (हारकर भाग जाना)–युद्ध में सेनापति के मरते ही पाकिस्तानी सेना के पाँव उखड़ गए।

126. **पीठ दिखाना** (पीछे हटना, हारकर भागना)–युद्धभूमि में पीठ दिखाना कायरता है।

127. **पेट में दाढ़ी होना** (बहुत चालाक होना)–उसे तुम भोला-भाला मत समझो, उसके तो पेट में दाढ़ी है।

128. **पेट में चूहे दौड़ना** (भूख लगना)–पहले मुझे खाना खा लेने दो, मेरे पेट में तो चूहे दौड़ रहे हैं।

129. **पोल खोलना** (गुप्त बात का भेद कह देना)–जब लोकसभा में विपक्षी सदस्यों की पोल खुलने लगी तो वे ताक-झाँक करने लगे।

130. **पैरों तले से ज़मीन निकल जाना** (होश उड़ जाना)–घर में आग लगने की खबर सुनकर उसके पैरों तले से ज़मीन निकल गई।

131. **फूला न समाना** (बहुत प्रसन्न होना)–वाद-विवाद प्रतियोगिता में इनाम मिलने पर वह फूला न समाया।

132. **फूँक-फूँक कर कदम रखना** (सोच-समझकर कार्य करना)–एक बार हानि उठाने के बाद अब वह बहुत फूँक-फूँक कर कदम रखता है।

133. **फलना-फूलना** (उन्नति करना)–प्रतापी राजा के शासन में व्यापार फलने-फूलने लगा।

134. **फूटी आँख न सुहाना** (बिलकुल न भाना)–दुष्ट प्रवृत्ति के कपटी मित्र मुझे फूटी आँख नहीं सुहाते।

135. **बाट जोहना** (प्रतीक्षा करना)–श्रीराम की बाट जोहते-जोहते अयोध्यावासियों ने बड़ी कठिनाई से चौदह वर्ष बिताए।

136. **बट्टा लगाना** (कलंकित करना)–माता-पिता की सहमति के बिना शादी करके पुत्र ने तो सारे कुल को बट्टा लगा दिया।

137. **बल्लियों उछलना** (बहुत प्रसन्नता प्रकट करना)–ज्योंही उसे पुरस्कार मिलने का समाचार मिला, वह बल्लियों उछलने लगा।

138. **बगुला भगत** (कपटी और पाखंडी व्यक्ति)–तुमने उसकी बातों पर विश्वास करके बड़ी गलती की है, मैं तो पहले से जानता था कि वह बगुला भगत है।

139. **बगलें झाँकना** (निरुत्तर हो जाना)–जब शिक्षक जी ने कमलेश से भूगोल के कुछ प्रश्न पूछे तो वह बगलें झाँकने लगा।

140. **बाल-बाल बचना** (मुश्किल से बचना)–आज तो वह गाड़ी के नीचे आने से बाल-बाल बचा।

141. **बाल की खाल निकालना** (व्यर्थ आलोचना करना)–अब बाल की खाल उतारने से क्या लाभ है, जो होना था सो हो गया।

Supplment Book.indb 17 4/9/2026 6:06:47 PM

142. **बात का बतंगड़ बना डालना** (जरा-सी बात को बढ़ा देना)–बात सामान्य थी किंतु, मोहित ने अधिकारियों तक पहुँचाकर जरा-सी बात का बतंगड़ बना दिया।
143. **बाएँ हाथ का खेल** (बहुत ही आसान काम)–सामाजिक विज्ञान विषय पर लेख लिखना तो मेरे बाएँ हाथ का खेल है।
144. **बाल भी बाँका न होना** (कुछ भी न बिगड़ना)–मेरे जीते जी किसकी मज़ाल है जो तुम्हारा बाल भी बाँका कर सके।
145. **बीड़ा उठाना** (उत्तरदायित्व लेना)–अर्जुन की अनुपस्थिति में वीर अभिमन्यु ने ही चक्रव्यूह तोड़ने का बीड़ा उठाया था।
146. **बाजी मारना** (आगे निकल जाना)–अभय ने तो इस वर्ष परीक्षा में प्रथम आकर बाजी मार ली।
147. **बरस पड़ना** (क्रोधित होना)–मुझ पर क्यों बरस रहे हो, यह पुस्तक तो राघव ने फाड़ी है।
148. **बहती गंगा में हाथ धोना** (समय का लाभ उठाना)–आजकल तो तुम्हारी ही सरकार है। तुम भी बहती गंगा में हाथ धो लो, वरना पछताओगे।
149. **भंडा फोड़ना** (भेद खोलना)–उसे अपने मन की बात मत बताओ, नहीं तो वह सब कही भी भंडा फोड़ कर सकता है।
150. **भीगी बिल्ली बनना** (भयभीत होकर रहना)–शरारती रोहन अपनी माँ को खूब तंग करता है, किंतु पिता जी के आते ही भीगी बिल्ली बन जाता है।
151. **मत मारी जाना** (समझ न रहना)–राजीव की तो मत मारी गई है, पढ़ाई छोड़कर दिनभर खेलता रहता है।
152. **मुँह दिखाने लायक न रहना** (लज्ज़ित होना)–अपने पुत्र के अशिष्ट आचरण पर पिता इतना लज्ज़ित हुए कि किसी को मुँह दिखाने लायक न रहे।
153. **मक्खियाँ मारना** (बेकार बैठना)–सारे दिन मक्खियाँ मारने से तो अच्छा है कि कोई काम सीख लो।
154. **मज़ा किरकिरा होना** (आनंद में विघ्न पड़ना)–रंगारंग कार्यक्रम के समय वर्षा ने सारा मज़ा किरकिरा कर दिया।
155. **माथा ठनकना** (बुराई की आशंका होना)–श्रीराम के राजतिलक के समय कैकेयी को काले कपड़े पहने देखकर राजा दशरथ का माथा ठनका।
156. **मारा-मारा फिरना** (इधर-उधर भटकना)–जब से वह यहाँ से नौकरी छोड़कर गया है, तब से ही मारा-मारा फिर रहा है।
157. **मुँह में पानी भर आना** (जी ललचाना)–रसगुल्लों को देखकर अजय के मुँह में पानी भर आया।
158. **मुँह ताकना** (निर्भर करना)–पैसा जोड़कर रखो, नहीं तो बुढ़ापे में दूसरों का मुँह ताकना पड़ेगा।
159. **मुँह की खाना** (बुरी तरह हारना)–मुहम्मद गौरी को भारत में सत्रह बार मुँह की खानी पड़ी थी।
160. **मुँह पर हवाइयाँ उड़ना** (डरना)–डाकुओं को देखकर उसके मुँह पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।
161. **मुँहतोड़ उत्तर देना** (निरुत्तर कर देना, खरा उत्तर देना)–हर बात पर श्याम ऐसा मुँहतोड़ उत्तर देता है कि कहते नहीं बनता।
162. **मुँह में खून लगना** (चस्का पड़ना)–इस अफ़सर के तो मुँह खून लग गया है, बिना रिश्वत के तो यह बात भी नहीं करता।
163. **मुँह पर कालिख लगाना** (कलंक लगाना)–बेटे को शराब पीता देखकर पिता ने कहा, "तुम्हें शर्म नहीं आती, तुमने तो मेरे मुँह पर कालिख लगा दी है।"
164. **मुँह फुलाना** (नाराज़ होना)–आज तुम इतनी देर से मुँह फुलाए क्यों बैठे हो?
165. **मुँह की बात छीन लेना** (दूसरे के दिल की बात कह देना)–पकौड़े तले जाने की बात कहकर तुमने तो मेरे मुँह की बात छीन ली।
166. **मुट्ठी गरम करना** (घूस/रिश्वत देना)–आजकल नौकरी प्राप्त करने के लिए न जाने कितनों की मुट्ठी गरम करनी पड़ती है।
167. **मुट्ठी में होना** (वश में होना)–वह तो मेरी मुट्ठी में है, उससे तो मनचाहा काम करवा सकता हूँ।
168. **रफ़ूचक्कर होना** (भाग जाना, चंपत होना)–सिपाही को आता देखकर चोर रफ़ूचक्कर हो गया।

Supplment Book.indb 18 4/9/2026 6:06:47 PM

169. **रंग में भंग पड़ना** (खुशी में बाधा पड़ना)–टी०वी० पर मैच देख रहा था, पर बिजली फेल होने से रंग में भंग पड़ गया।
170. **रँगा सियार होना** (धोखा देने वाला)–आजकल साधु-महात्माओं के वेश में प्रायः रँगे सियार भरे पड़े हैं।
171. **रंग लाना** (प्रभाव दिखाना)–आपका कठोर परिश्रम एक दिन अवश्य ही रंग लाएगा।
172. **राई का पहाड़ बनाना** (छोटी-सी बात को बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ाकर कहना)–जरा-सी बात थी, परंतु उसने तो बढ़ा-चढ़ाकर राई का पहाड़ बना दिया।
173. **रोड़ा अटकाना** (बाधा डालना)–आपको दूसरों के कामों में रोड़ा अटकाने की क्या आवश्यकता है?
174. **रोंगटे खड़े हो जाना** (भयभीत हो जाना)–जंगल में अचानक शेर की दहाड़ सुनकर शिकारी के रोंगटे खड़े हो गए।
175. **लोट-पोट हो जाना** (आनंद-विभोर हो जाना)–कॉमेडी शो देखते-देखते हम लोट-पोट हो गए।
176. **लहूलुहान हो जाना** (घायल हो जाना)–मेजर ने शत्रु का वीरता से सामना किया, पर आखिर लहूलुहान होकर गिर पड़े।
177. **लकीर का फ़कीर होना** (पुरानी बातों पर चलना)–लकीर के फ़कीर मत बनो, अपनी बुद्धि से सोच-समझकर काम करो।
178. **लहू का घूँट पीकर रह जाना** (विवशता के कारण क्रोध दबाकर बैठ जाना)–तुम्हारे अपमानजनक शब्द सुनकर उस समय सबके सामने तो मैं लहू का घूँट पीकर रह गया, परंतु अब आगे से ऐसा करने की सोचना भी मत।
179. **लाल-पीला होना** (बहुत अधिक क्रोधित होना)–अपना कीमती गुलदस्ता टूटता देख माँ लाल-पीली हो गईं।
180. **लेने के देने पड़ना** (लाभ के बदले हानि उठाना)–नई-नई दुकान है, सोच-समझकर कदम उठाओ, कहीं ऐसा न हो कि लेने के देने पड़ जाएँ।
181. **लोहे के चने चबाना** (बहुत ही कठिन कार्य करना)–भारतीय सेना के सामने टिकना लोहे के चने चबाने जैसा है।
182. **लोहा मानना** (श्रेष्ठता स्वीकार करना)–संसार के सभी देश भारत का लोहा मानते हैं।
183. **विष उगलना** (कटु वचन कहना)–आजकल पाकिस्तान भारत के विरुद्ध बहुत विष उगल रहा है।
184. **श्रीगणेश करना** (आरंभ करना)–शुभ कार्य का श्रीगणेश करने में देर नहीं लगानी चाहिए।
185. **सठिया जाना** (बुद्धि नष्ट होना)–दादा जी सठिया गए हैं, इसलिए वे कभी-कभी एक ही बात दोहराते हैं।
186. **साँप को दूध पिलाना** (दुष्ट की रक्षा करना)–बलबीर अच्छा व्यक्ति नहीं है, उसकी सहायता करके तुम साँप को दूध पिला रहे हो।
187. **सिर पर कफ़न बाँधना** (मरने को तत्पर रहना)–वीर पुरुष सदैव सिर पर कफ़न बाँधकर ही घर से निकलते हैं।
188. **सिर पर खून सवार होना** (अत्यधिक क्रोधित होना)–अपने भाई को घायल देख उसके सिर पर खून सवार हो गया।
189. **सिर पर उठाना** (बहुत शोर करना)–बच्चो! क्यों सारा घर सिर पर उठाते हो? थोड़ा चैन तो लेने दो।
190. **सिर खाना** (तंग करना)–क्यों इतनी देर से मेरा सिर खा रहे हो? अब थोड़ा चुप भी रहो।
191. **सिर-आँखों पर बैठाना** (बहुत सम्मान करना)–आप हमारे गुरु हैं, आपको सिर-आँखों पर बैठाना हमारा कर्तव्य है।
192. **सिर पर पाँव रखकर भागना** (घबराकर बहुत तेज़ भागना)–पुलिस के आते ही चोर सिर पर पाँव रखकर भाग खड़े हुए।
193. **सनसनी फैल जाना** (भय या आश्चर्य के कारण स्तब्ध होना)–आतंकवादी एक घर में घुस गए हैं, यह सुनकर सब ओर सनसनी फैल गई।
194. **हाथ न आना** (पकड़ में न आना)–मैंने बहुत कोशिश की, परंतु चिड़िया का बच्चा मेरे हाथ न आया।
195. **हवा से बातें करना** (बहुत तेज़ दौड़ना)–महाराणा प्रताप ने ज्यों ही लगाम लगाई, त्यों ही चेतक हवा से बातें करने लगा।
196. **हवा के घोड़े पर सवार होना** (शीघ्रता करना)–तुम तो हवा के घोड़े पर सवार होकर आए हो। ज़रा ठहरो, अभी तुम्हारा काम करता हूँ।
197. **हवाई किले बनाना** (बड़ी-बड़ी कामनाएँ करना)–ओम प्रकाश हर समय हवाई किला बनाता रहता है, परिश्रम बिलकुल नहीं करता।

Supplment Book.indb 19 4/9/2026 6:06:47 PM

198. **हाथ न आना** (पकड़ में न आना)–मैंने बहुत कोशिश की, परंतु चिड़िया का बच्चा मेरे हाथ न आया।
199. **होश सँभालना** (समझने लायक होना)–उसने होश सँभालते ही नृत्य में रुचि लेनी शुरू कर दी।
200. **हाथ धोकर पीछे पड़ना** (बुरी तरह पीछे पड़ना, पीछा न छोड़ना)–यह मालिक तो हाथ धोकर नौकर के पीछे पड़ा है, बेचारे को ज़रा भी चैन नहीं लेने देता।
201. **हाथ मलना** (पछताना)–परिश्रम के अभाव में यदि फेल हो गए तो हाथ मलना पड़ेगा।
202. **हाथ-पाँव फूलना** (भयभीत होना, घबरा जाना)–घर में चोरों को घुसते देख उसके हाथ-पाँव फूल गए।
203. **हाथ फैलाना** (माँगना)–आज एक अंधे भिखारी ने मेरे आगे हाथ फैलाया तो मैंने द्रवित होकर उसे दस रुपये दे दिए।
204. **हाथ पर हाथ रखकर बैठना** (खाली बैठना)–कुछ काम करो, इस प्रकार हाथ पर हाथ रखकर बैठने से भूखों मरने की स्थिति आ जाएगी।
205. **हथेली पर सरसों जमाना** (थोड़े समय में कठिन कार्य करने का प्रयास)–अरे, अभी तो तुमने व्यापार करना शुरू किया है और अभी से कार खरीदने के सपने देख रहे हो। हथेली पर सरसों जमाने की कोशिश मत करो, ज़रा व्यापार तो चल लेने दो।
206. **हाथों-हाथ बिक जाना** (बहुत जल्दी बिक जाना)–मेले में उसकी बनाई गई मिठाई हाथों-हाथ बिक गई।
207. **हुक्का पानी बंद करना** (समाज से बाहर कर देना)–गाँव वालों ने चोरी करने वाले आदमी का हुक्का पानी बंद कर दिया।
208. **होश उड़ जाना** (घबरा जाना)–कल रात मैं रास्ते में पड़ी हुई एक रस्सी को साँप समझ बैठा, बस मेरे तो होश ही उड़ गए।
209. **हवा का रुख पहचानना** (परिस्थिति को समझना)–हवा का रुख पहचानकर काम करने वाला कभी दुख नहीं उठाता।
210. **हक्का-बक्का रह जाना** (हैरान रह जाना)–अपने ऊपर चोरी का आरोप सुनकर मैं हक्का-बक्का रह गया।
211. **हवा लगना** (बुरी संगति का प्रभाव पड़ जाना)–शहर के कॉलेज में प्रवेश लेते ही आजकल के युवकों को हवा लग जाती है।
212. **हवा हो जाना** (भाग जाना)–माली को आते देख शरारती बच्चे बगीचे से हवा हो गए।
213. **हाथ को हाथ न सूझना** (घना अँधेरा होना)–बारिश का मौसम, ऊपर से बिजली गुल। हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा।
214. **हाथ साफ़ कर जाना** (चुरा लेना)–सिपाही के मुँह फेरते ही जेबकतरा हाथ साफ़ कर गया।

कुछ अन्य मुहावरे

1. **अंगारों पर पैर रखना**–जानबूझकर मुसीबत में पड़ना।
2. **अपना राग अलापना**–अपने स्वार्थ की ही बातें करना।
3. **ईश्वर को प्यारा होना**–मृत्यु होना।
4. **जले पर नमक छिड़कना**–दुखी व्यक्ति को और अधिक दुखी करना।
5. **गंगा नहाना**–बड़ा कार्य पूर्ण करना, कृतार्थ होना।
6. **गोबर गणेश होना**–मूर्ख होना।
7. **टोपी उछालना**–किसी का अपमान करना।
8. **ठंडा पड़ जाना**–मर जाना, मंदा होना।
9. **तारे गिनना**–व्यग्रता से प्रतीक्षा करना।
10. **तारे तोड़ लाना**–बहुत कठिन या असंभव काम कर डालना।
11. **तेली का बैल होना**–हमेशा काम में लगे रहना।
12. **दम तोड़ना**–आखिरी साँस गिनना, मर जाना।
13. **दाँतों में जीभ होना**–चारों ओर विरोधियों के बीच घिरे रहना।

Suppliment Book.indb 20 4/9/2026 6:06:47 PM

14. **दाहिना हाथ होना**—बहुत बड़ा सहायक होना।

15. **दिमाग चाटना**—अनावश्यक बोलकर परेशान करना।

16. **दूज का चाँद होना**—बहुत कम दिखाई देना।

17. **धरती पर पाँव न पड़ना**—अभिमान से भरा होना।

18. **नमक हलाल होना**—कृतज्ञ होना

19. **नाक रख लेना**—इज़्ज़त बचा लेना।

20. **नींव का पत्थर होना**—मुख्य सहायक होना।

21. **पाँव में शनीचर होना**—एक स्थान पर स्थिर न रहना।

22. **पारा उतरना**—क्रोध शांत होना।

23. **भूत सवार होना**—कुपित होना, किसी काम के लिए हठ पकड़ लेना।

24. **भौंह चढ़ाना**—नाराज़ होना।

25. **मगज चाटना**—अनावश्यक बोलकर परेशान करना।

26. **मीठी नींद सोना**—निश्चिंत होकर सोना।

27. **यमपुर पहुँचाना**—मार डालना।

28. **शर्म से पानी-पानी होना**—बहुत लज्जित होना।

29. **सड़क नापना**—व्यर्थ में इधर-उधर घूमना।

30. **सिर से पानी गुज़र जाना**—सहनशीलता की सीमा टूट जाना।

31. **सूरज को दीपक दिखाना**—बहुत विद्वान व्यक्ति को कुछ बतलाना।

32. **सूरज पर थूकना**—समर्थ व्यक्ति का व्यर्थ में अपमान करना, निर्दोष को दोषी बताना।

33. **सोने पर सुहागा होना**—अच्छी चीज़ का और अच्छा होना।

34. **हथियार डालना**—पराजय स्वीकार कर लेना।

मुहावरों का प्रयोग कैसे करें?

मुहावरों का प्रयोग इस प्रकार किया जाना चाहिए कि उनका अर्थ और अभिप्राय केवल संदर्भ से ही वह व्यक्ति भी आसानी से समझ जाए, जो उनके अर्थ नहीं जानता अथवा जिसने वह मुहावरा पहली ही बार पढ़ा या सुना है। अतएव मुहावरों का प्रयोग निम्नलिखित रूप में यदि किया जाता है तो अशुद्ध माना जाएगा—

- शेखर बहुत बुरा व्यक्ति है। वह तो अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनता रहता है।
- आँखों से अंगार उगलते हुए मास्टर साहब ने अपने भाई की ओर देखा।
- मैंने जब उससे अपने रुपये माँगे तो उसने टका-सा जवाब दे दिया।

उपर्युक्त उदाहरणों में प्रयुक्त मुहावरों से निश्चित रूप में उनके अभीष्ट अर्थ व्यक्त नहीं होते। सुनने या पढ़ने वाला व्यक्ति उनके दूसरे अर्थ भी समझ सकता है। अतएव वही प्रयोग शुद्ध और उपयुक्त माना जाता है, जो शुद्ध और उपयुक्त अर्थ को व्यक्त करता हो। उदाहरण के लिए, उपर्युक्त तीनों मुहावरों का समुचित प्रयोग हम इस प्रकार करेंगे—

- कोई दूसरा आदमी बड़ाई करे तो कुछ बात भी है मगर शेखर की तो बुरी आदत है कि वह अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनता रहता है।
- वृद्ध व्यक्ति के साथ अपने भाई की अशिष्टता देखकर मास्टर साहब ने आँखों से अंगार उगलते हुए अपने भाई की ओर देखा।
- मैंने जब उससे अपने ही दिए हुए रुपये वापस माँगे तो उसने टका-सा जवाब देकर मुझे निराश कर दिया।

पाठ्यपुस्तक 'गंगा' में प्रयुक्त मुहावरों की सूची

गद्य खंड

पाठ-1 दो बैलों की कथा

1. **जी तोड़ काम करना** (*अधिक मेहनत/परिश्रम करना*)–गृहकार्य पूरा करने के लिए विद्यार्थियों को जी तोड़ काम करना पड़ता है।
2. **गम खाना** (*दुख या अपमान सहन करना*)–लोकेश की कड़वी बातें सुनकर रूपाली ने गम खा लिया।
3. **ईंट का जवाब पत्थर से देना** (*कड़ी प्रतिक्रिया देना या शत्रु को करारा जवाब देना*)–जब साँड़ ने हीरा और मोती पर हमला किया, तो उन्होंने भी ईंट का जवाब पत्थर से देते हुए उसे हरा दिया।
4. **बछिया का ताऊ** (*मूर्ख व्यक्ति*)–अरे! श्याम को क्या समझा रहे हो, वह तो बछिया का ताऊ है, उसकी समझ में कुछ नहीं आएगा।
5. **दाँतों पसीना आना** (*कठिन परिश्रम करना या बहुत परेशानी झेलना*)–गया को उन दोनों अड़ियल बैलों को अपने घर तक ले जाने में दाँतों पसीना आ गया।
6. **नौ-दो ग्यारह होना** (*भाग जाना*)–जैसे ही काँजीहौस की दीवार टूटी, वहाँ बंद सभी जानवर एक-एक करके नौ-दो ग्यारह हो गए।
7. **जान हथेली पर रखना** (*जान की परवाह न करना या बहुत बड़ा जोखिम उठाना*)–हीरा और मोती ने अपनी जान हथेली पर रखकर गया की कैद से भागने का फैसला किया।
8. **जान से हाथ धोना** (*मर जाना या मृत्यु होना*)–काँजीहौस में यदि बाड़े की दीवार न टूटती, तो सभी जानवर भूख और प्यास के मारे जान से हाथ धो बैठते।
9. **गद्गद होना** (*बहुत प्रसन्न होना*)–जब बहुत दिनों बाद हीरा और मोती वापस घर आए, तो झूरी उन्हें देखकर गद्गद हो गया।

पाठ-2 क्या लिखूँ?

1. **दूर के ढोल सुहावने होना** (*दूर से कोई चीज़ अच्छी लगना/वास्तविकता का पता न होना*))–गाँव का जीवन शहर के लोगों को बहुत शांत लगता है, लेकिन सच तो यह है कि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

पाठ-3 संवादहीन

1. **तूफ़ान खड़ा करना** (*हंगामा करना*)–मन के अनुसार काम नहीं होने पर मोहित ने तूफ़ान खड़ा कर दिया।
2. **जान खाना** (*किसी बात के लिए बार-बार कहना*)–माँ ने रमन से कहा कि एक बार मना कर दिया न कि मोबाइल नहीं देखना, फिर क्यों जान खा रहे हो।
3. **तोते उड़ जाना** (*आशा के विपरीत कुछ हो जाना*)–विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम को देखकर मास्टर जगन के तोते उड़ गए।
4. **आग्नेय दृष्टि से देखना** (*बहुत अधिक गुस्से या क्रोध भरी नज़रों से देखना*)–रमन ने जब 18 वर्ष से पहले स्कूटी चलाने की ज़िद की, तो पिता जी ने उसे आग्नेय दृष्टि से देखा।
5. **टुकुर-टुकुर देखना** (*एकटक या लाचारी से देखते रहना*)–पिंजरे में बंद नया तोता जगन मास्टर को टुकुर-टुकुर देख रहा था जैसे उनकी बेबसी पर हैरान हो।

पाठ-4 ऐसी भी बातें होती हैं

1. **हाथ पसारना** (*याचना करना*)–पिता जी ने बुरे से बुरे समय में भी किसी के सामने हाथ नहीं पसारे।
2. **गहरी पहचान में बदलना** (*घनिष्ठ मित्रता या गहरे संबंधों में बदल जाना*)–कोरस की लड़कियों के साथ लगातार काम करने से उनसे लता जी का संबंध गहरी पहचान में बदल गया था।

Supplement Book.indb 22 4/9/2026 6:06:47 PM

पाठ-6 रीढ़ की हड्डी

1. **भीगी बिल्ली बनना** (*डर के मारे दब जाना या अत्यधिक विनम्र बन जाना*)–गोपाल प्रसाद के सामने उनका बेटा शंकर बिलकुल भीगी बिल्ली बना रहता है।
2. **इज्जत उतारना** (*अपमानित करना*)–भरी सभा में भरत ने अपने ही दोस्त की इज़्ज़त उतार दी।
3. **चूँ न करना** (*बिलकुल विरोध न करना या चुप रहना*)–रामस्वरूप जी गोपाल प्रसाद की गलत बातों पर भी चूँ नहीं करते थे क्योंकि उन्हें अपनी बेटी का विवाह करना था।
4. **रीढ़ की हड्डी न होना** (*अपना कोई व्यक्तित्व या स्वाभिमान न होना व्यक्तित्वहीन होना)*–उमा ने शंकर पर कटाक्ष किया कि जिसकी अपनी कोई सोच नहीं, उसकी रीढ़ की हड्डी ही नहीं है।

पाठ-7 मैं और मेरा देश

1. **दीवार में दरार पड़ना** (*किसी बनी-बनाई स्थिति में बाधा उत्पन्न होना/मतभेद होना*)–जब लाला लाजपत राय के वचनों ने लेखक को झकझोर दिया, तो उनकी मानसिक पूर्णता की दीवार में दरार पड़ गई।
2. **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता** (*किसी बड़े और कठिन काम को अकेला व्यक्ति पूरा नहीं कर सकता*)–टीम के सदस्यों को मिलकर काम करना होगा, क्योंकि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।
3. **मुग्ध होना** (*मोहित होना या बहुत अधिक प्रभावित होना*)–जापानी युवक का देशप्रेम देखकर स्वामी रामतीर्थ उस पर मुग्ध हो गए ।
4. **कलंक का टीका लगाना** (*बदनाम होना या देश/परिवार के सम्मान को ठेस पहुँचाना*)–सरकारी पुस्तकालय से चित्र चुराने वाले छात्रों ने अपने देश के मस्तक पर कलंक का टीका लगा दिया।
5. **सिर ऊँचा करना** (*सम्मान लाभ या गौरव सम्मान)*–जापानी युवक ने स्वामी जी को फल देकर अपनी निस्स्वार्थ सेवा से अपने देश का सिर ऊँचा कर दिया ।
6. **निहाल होना** (*कृतार्थ होना*)–जब राष्ट्रपति महोदय ने किसान के हाथों से शहद खाया, तो वे निहाल हो गए ।

काव्य खंड

पाठ-8 रैदास के पद

1. **रट लगना** (*एक ही बात को बार-बार दोहराना*)–छोटे बच्चे खिलौने के लिए दिनभर 'दिलाओ-दिलाओ' की रट लगाए रहते हैं।
2. **सोने पर सुहागा होना** (*किसी अच्छी चीज़ का और भी अधिक निखर जाना या श्रेष्ठ हो जाना*)–रवि ने कक्षा में टॉप किया और अब उसे स्कॉलरशिप भी मिल गई, तो यह तो सोने पर सुहागा हो गया।

पाठ-11 झाँसी की रानी

1. **मुँह की खाना** (*बुरी तरह हार जाना*)–झाँसी के मैदान में जनरल स्मिथ को रानी के शौर्य के सामने मुँह की खानी पड़ी।
2. **पैर पसारना** (*अपना प्रभाव या अधिकार बढ़ाना*)–अंग्रेज़ धीरे-धीरे पूरे भारत में अपने पैर पसार रहे थे, जिसे रानी ने चुनौती दी।
3. **तलवार खींचना** (*युद्ध के लिए तैयार होना)*–जब झाँसी पर संकट आया, तो रानी ने वीरता के साथ अपनी तलवार खींच ली।

पाठ-12 घर की याद

1. **आदमी से भागना** (*लोगों से दूर रहना या एकांतप्रिय हो जाना*)–कवि सावन से कहते हैं कि मेरे माता-पिता को यह मत बताना कि मैं यहाँ उदास होकर आदमी से भागता हूँ।

Supplment Book.indb 23 4/9/2026 6:06:47 PM

अभ्यास-कार्य

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित वाक्यों को उपयुक्त मुहावरों के द्वारा पूरा कीजिए।

(क) कल रात थाने में चोरी हो गई, सच है चिराग...... ....।

(ख) यहाँ किस पर विश्वास किया जाए, छोटे-बड़े सब एक ही ....।

(ग) राणा प्रताप की वीरता को देखकर अकबर भी दाँतों ....।

(घ) अरे! तुमने तो जरा-सी बात को लेकर तिल का ....।

(ङ) विपक्षी दलों के विरोध के कारण इस बिल का पेश होना खटाई..।

(च) बिहारी ने अपने दोहों में गागर ....।

2. निम्नलिखित सरल कथनों के लिए उपयुक्त मुहावरे लिखिए।

(क) कार्यालयों में काम बहुत धीमी गति से होता है।
....

(ख) यह तो अति सरल काम है।
....

(ग) पुत्र के शोक में माँ बहुत जोर-जोर से रोई।
....

(घ) इतना बढ़ा-चढ़ा कर क्यों सुना रहे हो?
....

(ङ) युद्ध में शत्रु बहुत संकट में पड़ गया और उसके कई सैनिक मारे गए।
....

(च) नदी पर पुल बनाने की योजना अभी तक यों ही पड़ी है।
....

(छ) मूर्ख पुत्र ने पिता का सारा मान नष्ट कर दिया है।
....

3. इन वाक्यों में प्रयुक्त मुहावरों के स्थान पर इनके समानार्थक दूसरे मुहावरों का प्रयोग कीजिए।

(क) गिलास टूटने के कारण मालिक आग-बबूला हो उठा।
....

(ख) अपने ऊपर चोरी का आरोप सुनकर मैं स्तब्ध रह गया।
....

(ग) वह थोड़े दिनों का मेहमान है, एक बार देख आओ।
....

(घ) बिल्ली को देखकर चूहा नौ दो ग्यारह हो गया।
....

(ङ) वीर लोग यदि ठान लें तो आकाश के तारे भी तोड़ लाते हैं।
....

4. निम्नलिखित शब्द-समूहों के लिए उचित मुहावरे लिखिए।

1. तनिक भी ध्यान न देना– ....
2. रुकावट डालना– ....
3. काम न बनना– ....
4. कठोर परिश्रम करना– ....
5. बहुत तंग करना– ....
6. जोरों से भूख लगना– ....
7. बहुत गुस्सा करना– ....
8. बहुत कम दिखाई देना– ....
9. भेद खुलना– ....
10. अचानक धन का आ जाना– ....
11. जिस पर कहने का कुछ असर न हो– ....
12. स्वागत करना– ....
13. अंधाधुंध खर्च करना– ....

Suppliment Book.indb 24 4/9/2026 6:06:48 PM

14.. धोखा देना–

....

15. धीरे-धीरे बातें करना–

....

16. भाग जाना–

....

17. भीख माँगना–

....

18. अत्यंत लज्जित होना–

....

19. मुसीबत में पड़ना–

....

20. तनिक भी असर न होना–

....

21. भाग खड़े होना–

....

22. कोरा उत्तर देना–

....

23. खुशामद करना–

....

5. नीचे दिए मुहावरों को वाक्यों में इस प्रकार प्रयुक्त कीजिए कि उनके अर्थ स्पष्ट हो जाएँ :

1. ज़मीन-आसमान एक कर देना

....

2. मिट्‌टी में मिला देना

....

3. ताँता बँधना

....

4. मनमानी करना

....

5. हक्का-बक्का रह जाना

....

6. खतरा मोल लेना

....

7. मंत्रमुग्ध हो जाना

....

8. बात का बतंगड़ बना डालना

....

9. अनुनय-विनय करना

....

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. "मुहावरे भाषा के प्राण हैं।" इस कथन की पुष्टि उदाहरण सहित कीजिए।

....

....

2. 'आँख खुलना' मुहावरे का प्रयोग दो अलग-अलग संदर्भों (सकारात्मक और चेतावनीपूर्ण) में कीजिए।

....

....

3. 'नाकों चने चबाना' और 'पसीने छूटना' दोनों ही मुहावरे कठिन परिस्थिति को दर्शाते हैं, फिर भी इनमें क्या सूक्ष्म अंतर है?

....

....

4. "लालची व्यक्ति की स्थिति" को दर्शाने के लिए कोई नया मुहावरा गढ़िए और उसका अर्थ स्पष्ट कीजिए।

....

....

5. 'अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना' और 'आ बैल मुझे मार'–दोनों में स्वयं को हानि पहुँचाने का भाव है। इनके पीछे के 'निहितार्थ' में क्या अंतर है?

....

....

6. 'अँधेर नगरी चौपट राजा' मुहावरा (लोकोक्ति के निकट) किसी शासन व्यवस्था की किस कमी की ओर संकेत करता है?

....

....

7. '19-20 का अंतर होना' और '18-19 का अंतर होना'–इनमें से कौन-सा मुहावरा सूक्ष्म श्रेष्ठता को दर्शाता है और क्यों?

....

....

Supplment Book.indb 25 4/9/2026 6:06:48 PM

8. 'हथियार डाल देना' और 'मैदान छोड़ना'–इनमें से कौन-सा मुहावरा पूर्ण आत्मसमर्पण की मानसिक स्थिति को अधिक प्रभावी ढंग से व्यक्त करता है?

....

....

9. 'गंगा नहाना' मुहावरा क्या केवल धार्मिक शुद्धि का संकेत है?

....

....

10. 'घाट-घाट का पानी पीना' अनुभव का सकारात्मक पक्ष है या नकारात्मक?

....

....

11. 'हवा का रुख देखना' अवसरवादिता है या बुद्धिमानी?

....

....

12. 'खरी-खरी सुनाना' में 'खरी' शब्द का क्या अर्थ है? समझाइए।

....

....

13. 'मुँह में राम बगल में छुरी'–यह किस मानवीय विकृति का चित्रण है?

....

....

14. 'कलई खुलना' मुहावरे का भौतिक आधार क्या है? समझाइए।

....

....

15. 'काठ का उल्लू'–यहाँ 'काठ' शब्द मूर्खता की किस सीमा को बताता है?

....

....

16. 'मिट्टी का माधो' और 'गोबर गणेश' में क्या समानता है?

....

....

17. 'हथली पर सरसों जमाना' असंभव को संभव करने का दावा है या जल्दबाजी?

....

....

6. निम्नलिखित मुहावरों के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

1. हाथ साफ़ करना तथा हाथ धो बैठना।

....

2. लोहा लेना और लोहा मानना।

....

3. पेट में चूहे कूदना और पेट में दाढ़ी होना।

....

4. कान भरना और कान खड़े होना।

....

5. सिर उठाना और सिर आँखों पर बिठाना।

....

6. रंग जमना और रंग उड़ना।

....

7. पैर उखड़ना और पैर जमाना।

....

8. मुँह की खाना और मुँह काला करना।

....

9. गाल बजाना और गाल फुलाना।

....

10. लकीर का फकीर होना और भीगी बिल्ली बनना।

....

❑❑❑

Supplement Book.indb 26 4/9/2026 6:06:48 PM

3

संज्ञा
(Noun)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और समझिए–

समीर और उसकी छोटी **बहन सीमा** अपने **पिता जी** के साथ **दिल्ली** के **चिड़ियाघर** गए। **रविवार** होने के कारण चिड़ियाघर देखने बहुत **बच्चे** आए थे। पिता जी ने अंदर जाने के लिए तीन **टिकिट** खरीदे। चिड़ियाघर में तरह-तरह के **जानवर** थे। **शेर**, **चीता**, **भालू**, **हाथी**, **जिराफ़** आदि जानवरों को देखकर समीर को बहुत **आनंद** आया। **बंदर** के करतब देखकर सीमा को बहुत **मज़ा** आया। सीमा ने उसे **चने** खिलाए। दोनों बच्चों ने पूरे दिन बहुत **मस्ती** की। **घर** लौटते समय पिता जी ने दोनों को **आइसक्रीम** खिलाई।

ऊपर के गद्यांश में प्रयुक्त सभी मोटे अक्षरों वाले शब्द किसी-न-किसी व्यक्ति/प्राणी, वस्तु, स्थान, दिन, भाव आदि के नाम हैं।

व्यक्तियों/प्राणियों के नाम : समीर, बहन, पिता जी, सीमा, बच्चे, जानवर, शेर, चीता, भालू, हाथी, जिराफ़, बंदर

दिन का नाम : रविवार

वस्तुओं के नाम : टिकिट, चने, आइसक्रीम

स्थानों के नाम : दिल्ली, चिड़ियाघर, घर

भावों के नाम : आनंद, मज़ा, मस्ती

इस तरह, ये सभी शब्द किसी-न-किसी के नाम को बता रहे हैं। व्याकरण में, ऐसे शब्दों को 'संज्ञा' शब्द कहते हैं।

जो शब्द किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव, स्थिति आदि के नाम का बोध कराते हैं, 'संज्ञा' शब्द कहलाते हैं।

संज्ञा के भेद

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा–

बच्चो, संसार के प्रत्येक व्यक्ति/प्राणी, वस्तु, स्थान आदि को कोई-न-कोई नाम अवश्य होता है, जिससे उस विशेष व्यक्ति, प्राणी, वस्तु तथा स्थान आदि की पहचान होती है; जैसे–

व्यक्तियों/प्राणियों के नाम– सुमन, शिखा, दीपक, श्री अरविंद, अन्नामलाई, विराट कोहली, सानिया मिर्जा, तुलसीदास, कबीरदास, कामधेनु (देवताओं की गाय का नाम), गरुड़ (भगवान विष्णु के वाहन का नाम), ऐरावत (इंद्र के हाथी का नाम) आदि।

वस्तुओं के नाम– सुदर्शन चक्र (विष्णु के चक्र का नाम), कल्पवृक्ष (देवताओं के वृक्ष का नाम), रामचरितमानस (तुलसीदास द्वारा रचित ग्रंथ का नाम)

स्थानों/नगरों/देशों के नाम– कनाट प्लेस, चाँदनी चौक, चौपाटी, जुहू, करोलबाग (स्थानों के नाम), भारत, मलेशिया, पोलैंड, इटली (देशों के नाम), लंदन, दिल्ली, आगरा, मुंबई (नगरों के नाम), एशिया, यूरोप, अमेरिका (महाद्वीपों के नाम) आदि।

इमारतों के नाम– ताजमहल, चारमीनार, इंडिया गेट, सुप्रीम कोर्ट आदि।

त्योहारों के नाम– क्रिसमस, ईद, ओणम, होली, दिवाली, गणतंत्र दिवस।

दिनों और महीनों के नाम– रविवार, मंगलवार, गुरुवार, जनवरी, दिसंबर, मार्च, अप्रैल आदि।

जो संज्ञा शब्द किसी विशेष व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान आदि के नाम की सूचना देते हैं, 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' शब्द कहलाते हैं।

Supplment Book.indb 27 4/9/2026 6:06:48 PM

ध्यान रखिए–

व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों की सबसे बड़ी पहचान यह है कि इनके बहुवचन रूप नहीं बनते।

उदाहरण के लिए, क्रिसमस, रविवार, चार मीनार, ताजमहल, अमेरिका, गोदान आदि सभी संज्ञा शब्द हमेशा एकवचन में ही प्रयुक्त होते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के कुछ अन्य उदाहरण–

नेपाल, श्रीलंका, कुतुबमीनार, संसद भवन, होली, दशहरा, सोमवार, मंगलवार, शुक्रवार, मार्च, अक्टूबर, दिसंबर, गंगा, यमुना, कावेरी, कृष्णा, अटलांटिक महासागर, अरब सागर आदि।

2. जातिवाचक संज्ञा–

बच्चो, प्रत्येक व्यक्ति या वस्तु किसी-न-किसी समुदाय या जाति का सदस्य अवश्य होता है; जैसे– अमित शाह, नरेंद्र मोदी, इंदिरा गांधी आदि संज्ञा शब्द **मनुष्यों** के नाम हैं; नेपाल, चीन, ईरान आदि संज्ञा शब्द **देशों** के नाम हैं; मार्च, अक्टूबर, दिसंबर आदि संज्ञा शब्द **महीनों** के नाम हैं तथा होली, दीपावली, दशहरा आदि संज्ञा शब्द **त्योहारों** के नाम हैं। इस तरह, **मनुष्य**, **देश**, **महीना**, **त्योहार** आदि संज्ञा शब्द किसी-न-किसी जाति को बता रहे हैं। ऐसे संज्ञा शब्द जातिवाचक संज्ञा शब्द कहलाते हैं।

जो संज्ञा शब्द किसी जाति, समूह, एक जैसे प्राणियों, स्थानों, वस्तुओं आदि का बोध कराते हैं, जातिवाचक संज्ञा शब्द कहलाते हैं।

जातिवाचक संज्ञा शब्दों के कुछ और उदाहरण– पौधा, वृक्ष, नदी, नाला, झरना, पहाड़, जंगल, मेज़, कुरसी, घड़ी, प्लेट, कप, चाकू, चम्मच, कैंची, बिल्ली, कुत्ता, गाय, बकरी, घोड़ा, छात्र, छात्राएँ, अध्यापक तथा अध्यापिका आदि।

जातिवाचक संज्ञा शब्दों के दो उपभेद किए जाते हैं– (क) द्रव्यवाचक संज्ञा तथा (ख) समूहवाचक संज्ञा।

(क) द्रव्यवाचक संज्ञा– इस वर्ग में, **'द्रव्य'** या **'पदार्थों'** का बोध करने वाले जातिवाचक संज्ञा शब्द आते हैं।

देखिए, नीचे दिए गए वाक्यों में आने वाले मोटे अक्षरों में छपे शब्द–

(i) यह **चाँदी** की चम्मच है। *(ii)* वह **लकड़ी** की कुरसी है। *(iii)* यहाँ **पनीर** मिलता है।

इन वाक्यों के मोटे छपे अक्षरों वाले शब्द– 'चाँदी', 'लकड़ी' और 'पनीर' किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध करा रहे हैं, अतः ये 'द्रव्यवाचक संज्ञा' शब्द हैं।

द्रव्य/पदार्थों की सबसे बड़ी पहचान यह है कि इनसे तरह-तरह की वस्तुएँ बनाई जा सकती हैं; जैसे– चाँदी से आभूषण, लकड़ी से फ़र्नीचर और पनीर से मिठाई आदि।

किसी द्रव्य, पदार्थ, धातु आदि का बोध कराने वाले जातिवाचक संज्ञा शब्द 'द्रव्यवाचक संज्ञा' कहलाते हैं।

द्रव्यवाचक संज्ञाओं के कुछ अन्य उदाहरण– प्लास्टिक, रबर, कागज़, सिल्क, सोना, चाँदी, एल्यूमीनियम, पीतल, ताँबा, स्टील, लकड़ी, दूध, दही, घी, ऊन आदि।

ध्यान रखिए–

द्रव्यवाची संज्ञा शब्दों का प्रयोग भी प्रायः एकवचन में ही होता है क्योंकि ये शब्द गणनीय नहीं होते अर्थात इनकी गिनती नहीं की जा सकती।

(ख) समूहवाचक संज्ञा– 'समूहवाचक संज्ञा' शब्दों को समझने के लिए नीचे दिए गए वाक्यों में आने वाले मोटे अक्षरों में छपे शब्दों को ध्यान से देखिए–

(i) उसके घर में **पुलिस** आई है। *(ii)* आज स्कूल में एक **सभा** आयोजित की जा रही है।

(iii) जानवर अकसर **झुंड** बनाकर ही निकलते हैं।

इन वाक्यों के मोटे छपे अक्षरों वाले शब्द– 'पुलिस', 'सभा' और 'झुंड' अपने-अपने समूह या समुदाय का बोध करा रहे हैं। ध्यान रखिए, 'समूह' या 'समुदाय' हमेशा एक से अधिक सदस्यों से बनता है।

Supplment Book.indb 28 4/9/2026 6:06:48 PM

वे जातिवाचक संज्ञा शब्द जो किसी वस्तु, प्राणी आदि के समूह या समुदाय का बोध कराते हैं, 'समूहवाचक संज्ञा' शब्द कहलाते हैं।

समूहवाचक संज्ञाओं के कुछ अन्य उदाहरण– परिवार, सेना, कक्षा, टीम, दल, भीड़, पुलिस, झुंड, सभा, दरबार, जुलूस आदि।

ध्यान रखिए–

द्रव्यवाची संज्ञा शब्दों की तरह समूहवाची संज्ञा शब्दों का प्रयोग भी प्रायः एकवचन में ही होता है क्योंकि ये एक ही जाति के सदस्यों के समूह को एक इकाई के रूप में व्यक्त करते हैं।

3. भाववाचक संज्ञा–

'भाववाचक संज्ञा' शब्दों के अंतर्गत वे संज्ञा शब्द आते हैं, जिनका व्यक्ति अनुभव तो कर सकता है पर उन्हें देख या छू नहीं सकता। ये शब्द किसी भाव, अनुभूति, स्थिति, अवस्था, गुण, दोष, स्वभाव, संकल्पना आदि की ओर संकेत करते हैं; जैसे–अच्छाई, बुराई, बीमारी, सुंदरता, जन्म, मृत्यु आदि।

जो संज्ञा शब्द किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, दोष, शील, स्वभाव, धर्म, भाव, अवस्था, स्थिति, संकल्पना आदि का बोध कराते हैं, 'भाववाचक संज्ञा' शब्द कहलाते हैं।

भाववाचक संज्ञाओं के कुछ अन्य उदाहरण–

भावों के नाम : सुख, दुख, प्यार, गुस्सा, क्रोध, ममता आदि।

गुणों/दुर्गुणों के नाम : अच्छाई, बुराई, ईमानदारी, सच, झूठ, बेईमानी, धोखा, ठगी, चोरी, डकैती आदि।

अवस्था के नाम : बचपन, लड़कपन, जवानी, यौवन, बुढ़ापा आदि।

ध्यान रखिए–

हिंदी में दो प्रकार के भाववाचक संज्ञा शब्द मिलते हैं– मूल भाववाचक संज्ञा शब्द तथा यौगिक भाववाचक संज्ञा शब्द। देखिए, दोनों के उदाहरण–

मूल भाववाचक संज्ञा शब्द– सुख, दुख, झूठ, सच, जन्म, मृत्यु, दया, प्रेम, घृणा, क्षमा, प्रार्थना आदि।

यौगिक भाववाचक संज्ञा शब्द– यौगिक भाववाचक संज्ञा शब्दों की रचना मुख्यतः ये पाँच प्रकार के शब्दों से की जाती है–

1. जातिवाचक संज्ञा शब्दों से
2. सर्वनामों से
3. विशेषणों से
4. क्रियाओं से तथा
5. अव्ययों से

भाववाचक संज्ञा शब्दों की रचना

1. जातिवाचक संज्ञा शब्दों से

जातिवाचक	भाववाचक	जातिवाचक	भाववाचक	जातिवाचक	भाववाचक
मित्र	मित्रता/मैत्री	मर्द	मर्दानगी	मानव	मानवता
युवक	यौवन	राष्ट्र	राष्ट्रीयता	लड़का	लड़कपन
व्यक्ति	व्यक्तित्व	वेद	वेदत्व	वत्स	वात्सल्य
वक्ता	वाक्तृत्व/वक्तृता	वीर	वीरत्व/वीरता	चोर	चोरी
ईश्वर	ऐश्वर्य/ईश्वरत्व	कुमार	कौमार्य	तरुण	तारुण्य/तरुणाई
गुरु	गुरुता/गुरुत्व	ठग	ठगी	शठ	शठता
चिकित्सक	चिकित्सा	शिशु	शैशव/शिशुता	ईमान	ईमानदारी

Supplment Book.indb 29 4/9/2026 6:06:48 PM

जातिवाचक	भाववाचक	जातिवाचक	भाववाचक	जातिवाचक	भाववाचक
शत्रु	शत्रुता	सज्जन	सज्जनता	नर	नरत्व
स्त्री	स्त्रीत्व	इनसान	इनसानियत	पुरुष	पौरुष / पुरुषत्व
आदमी	आदमियत	देव	देवत्व	प्रभु	प्रभुता / प्रभुत्व
दोस्त	दोस्ती	नेता	नेतृत्व	बाल	बालपन
नारी	नारीत्व	पंडित	पंडिताई/पांडित्य	मनुष्य	मनुष्यता/मनुष्यत्व
पशु	पशुता/पशुत्व	बच्चा	बचपन	माता	मातृत्व
बंधु	बंधुत्व	बूढ़ा	बुढ़ापा	भ्रातृ	भ्रातृत्व

2. सर्वनामों से

सर्वनाम	भाववाचक	सर्वनाम	भाववाचक	सर्वनाम	भाववाचक
सर्व	सर्वस्व	स्व	स्वत्व	आप	आपा
अहं	अहंकार	अपना	अपनत्व/अपनापन	मम	ममता/ममत्व
निज	निजत्व/निजता	पराया	परायापन	....	....

3. विशेषणों से

विशेषण	भाववाचक	विशेषण	भाववाचक	विशेषण	भाववाचक
चौड़ा	चौड़ाई	गंदा	गंदगी/गंद	चालाक	चालाकी
छोटा	छुटपन	तीव्र	तीव्रता	ठंडा	ठंडापन / ठंडक
तपस्वी	तप/तपस्या	धीर	धैर्य/धीरता/धीरज	दुष्ट	दुष्टता
धवल	धवलता	नीच	नीचता	नास्तिक	नास्तिकता
निपुण	निपुणता	प्रतापी	प्रताप	नीला	नीलापन/नीलिमा
परतंत्र	परतंत्रता	परिष्कृत	परिष्कार	प्यासा	प्यास
पीला	पीलापन	प्रसन्न	प्रसन्नता	बुरा	बुराई
पतला	पतलापन	बुद्धिमान	बुद्धिमत्ता	भला	भलाई
बहुत	बहुतायत	भिन्न	भिन्नता	मलिन	मलिनता/मालिन्य
भयानक	भय	भूखा	भूख	मधुर	माधुर्य/मधुरता
महात्मा	माहात्म्य	मीठा	मिठास	महान	महानता
लाल	लाली / लालिमा	मूर्ख	मूर्खता	लोभी	लोभ
विद्वान	विद्वता	योगी	योग	लघु	लाघव/लघुता
अजनबी	अजनबीपन	लंबा	लंबाई	विधवा	वैधव्य
अमीर	अमीरी	विषम	विषमता / वैषम्य	अरुण	अरुणिमा
आस्तिक	आस्तिकता	अमर	अमरता / अमरत्व	आलसी	आलस्य

Suppliment Book.indb 30 4/9/2026 6:06:48 PM

विशेषण	भाववाचक	विशेषण	भाववाचक	विशेषण	भाववाचक
उचित	औचित्य	अच्छा	अच्छाई	उपयोगी	उपयोगिता
एक	एकता / ऐक्य	उदासीन	उदासीनता	ऊँचा	ऊँचाई
कमज़ोर	कमज़ोरी	उदास	उदासी	कठोर	कठोरता
कुलीन	कुलीनता	कंजूस	कंजूसी	कायर	कायरता
वीर	वीरता	कर्ता	कर्तृत्व	कृत्रिम	कृत्रिमता
विकल	विकलता	कृतघ्न	कृतघ्नता	श्वेत	श्वेतिमा
शिष्ट	शिष्टता	विस्तृत	विस्तार	स्वतंत्र	स्वतंत्रता
स्पष्ट	स्पष्टता	विनम्र	विनम्रता	सूक्ष्म	सूक्ष्मता
सुंदर	सौंदर्य/सुंदरता	सुगम	सुगमता	हरा	हरियाली
सज्जन	सज्जनता	स्वामी	स्वामित्व	कड़वा	कड़वाहट
स्वस्थ	स्वास्थ्य	सफ़ेद	सफ़ेदी	कटु	कटुता
कुशाग्र	कुशाग्रता	समृद्ध	समृद्धि	खट्टा	खटास/खट्टापन
गहरा	गहराई	हिंसक	हिंसा	गरम	गरमी
गरीब	गरीबी	काला	कालिमा/कालापन	चपल	चपलता/चापल्य
कुटिल	कुटिलता	कुशल	कुशलता/कौशल	चंचल	चंचलता

4. क्रियाओं से

क्रिया	भाववाचक	क्रिया	भाववाचक	क्रिया	भाववाचक
बनाना	बनावट	भिड़ना	भिड़ंत	मिलना	मिलन
लिखना	लिखावट/लेख	लगाना	लगाव	लड़ना	लड़ाई
सीना	सिलाई	लेना-देना	लेन-देन	सुधारना	सुधार
उभरना	उभार	हारना	हार	सजाना	सजावट
अस्ति	अस्तित्व	उड़ना	उड़ान	हँसना	हँसी
उतरना	उतराई	उलझना	उलझन/उलझाव	उतारना	उतार
कमाना	कमाई	खोजना	खोज	काटना	काट/कटाई
खाना-पीना	खान-पान	गड़गड़ाना	गड़गड़ाहट	खेलना	खेल
गिरना	गिरावट	घबराना	घबराहट	गाना	गान
चिल्लाना	चिल्लाहट	चुनना	चुनाव	चढ़ना	चढ़ाई/चढ़ाव
चलना	चाल/चलन	छटपटाना	छटपटाहट	चिकना	चिकनाई
जीना	जीवन	जपना	जप	जलना	जलन

Suppliment Book.indb 31 4/9/2026 6:06:48 PM

क्रिया	भाववाचक	क्रिया	भाववाचक	क्रिया	भाववाचक
झुकना	झुकाव	झुँझलाना	झुँझलाहट	जीतना	जीत
टोकना	टोक	थकना	थकान	टिकना	टिकाव
दौड़ना	दौड़	दहाड़ना	दहाड़	देखना	दृष्टि
पहुँचना	पहुँच	पूजना	पूजा	धोना	धुलाई
फैलना	फैलाव	बचना	बचाव	पढ़ना	पढ़ाई
बहना	बहाव	बुनना	बुनाई	बढ़ना	बढ़ोतरी
मिलाना	मिलान	मुसकराना	मुसकराहट/मुसकान	बोलना	बोल

5. अव्ययों से

अव्यय	भाववाचक	अव्यय	भाववाचक	अव्यय	भाववाचक
दूर	दूरी	मना	मनाही	समीप	सामीप्य
ऊपर	ऊपरी	धिक्	धिक्कार	निकट	निकटता

- **व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग**

व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों का कई बार इस प्रकार प्रयोग दिखाई देता है कि उस संदर्भ में वे जातिवाचक संज्ञा की कोटि में आ जाते हैं। इसका कारण होता है उस व्यक्ति विशेष के गुण। जब हम किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के नाम का प्रयोग उसके गुणों को बताने के लिए करते हैं तब वे शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा न होकर जातिवाचक संज्ञा बन जाते हैं; जैसे– 'भीष्म पितामह' दृढ़ प्रतिज्ञा या संकल्प के लिए विख्यात हैं। यदि कोई कहता है कि 'मदन तो **भीष्म पितामह** है उसे रास्ते से कोई नहीं डिगा सकता' तो यहाँ 'भीष्म पितामह' व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द का प्रयोग 'जातिवाचक संज्ञा' के रूप में माना जाएगा।

कुछ अन्य उदाहरण देखिए–

1. उनका पुत्र **श्रवणकुमार** है।
2. आजकल **कर्ण** नहीं मिलते।
3. वह तो **विभीषण** निकला, अपनों को ही धोखा दे गया।
4. वह तो **एकलव्य** है, गुरु के लिए कुछ भी कर सकता है।

यहाँ **श्रवणकुमार** मातृ-पितृभक्त व्यक्तियों के लिए, **कर्ण** दानी व्यक्तियों के अर्थ में, **विभीषण** विश्वासघाती के अर्थ में तथा **एकलव्य** गुरुभक्तों के प्रतिनिधि के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

- **जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग**

कुछ जातिवाचक शब्दों के अर्थ भी किसी व्यक्ति या स्थान के लिए रूढ़ हो जाते हैं; जैसे– 'पंडित जी' शब्द जातिवाचक है परंतु नेहरू जी के लिए रूढ़ हो गया है– '**पंडित जी** हमारे देश के पहले प्रधानमंत्री थे।' यहाँ यह शब्द अब जाति का बोध न कराकर व्यक्ति का बोध करा रहा है।

कुछ अन्य उदाहरण देखिए–

1. **नेता जी** कहा था– "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।" (नेता जी सुभाषचंद्र बोस)
2. **महात्मा जी** सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। (महात्मा गांधी)
3. स्वतंत्रता के बाद के भारत में **सरदार** के कामों को कौन नहीं जानता! (सरदार पटेल)

Supplment Book.indb 32 4/9/2026 6:06:48 PM

- **भाववाचक संज्ञा शब्दों का जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग**

भाववाचक संज्ञा शब्दों का प्रयोग एकवचन में होता है लेकिन जब कभी कुछ भाववाचक संज्ञा शब्द बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं, तब वे 'जातिवाचक' बन जाते हैं; जैसे–

1. किसी में इतनी **अच्छाइयाँ** हो सकती हैं, मैं सोच नहीं सकता।
2. **ऊँचाइयाँ** नापनी हों तो पर्वतों की सैर करो।
3. सबकी **प्रार्थनाएँ** ईश्वर तक पहुँचती हैं।
4. पिता-पुत्र में **दूरियाँ** बढ़ने लगी थीं।

ध्यान देने योग्य बातें

- किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, स्थिति, गुण अथवा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं।
- **संज्ञा के भेद–**
  व्यक्तिवाचक – किसी एक विशेष व्यक्ति, प्राणी, वस्तु या स्थान का बोध कराने वाले शब्द।
  जातिवाचक – किसी जाति, पदार्थ, प्राणी या समूह का बोध कराने वाले शब्द। उपभेद– द्रव्यवाचक एवं समूहवाचक।
  भाववाचक – किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण-धर्म, दोष, शील, स्वभाव, अवस्था, भाव, संकल्पना आदि का बोध कराने वाले शब्द।
- कभी-कभी व्यक्ति के विशिष्ट गुणों के कारण व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक की तरह होता है।
- इसी तरह कुछ जातिवाचक शब्द किसी विशेष व्यक्ति के लिए रूढ़ हो जाते हैं।
- बहुवचन में प्रयुक्त होने पर भाववाचक संज्ञाएँ जातिवाचक बन जाती हैं।

अभ्यास-कार्य

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. सही कथन के सामने '✔' तथा गलत कथन के सामने '✘' लगाइए–

(क) 'संज्ञा' तथा 'नाम' शब्द एक दूसरे के पर्याय हैं। ◯

(ख) संज्ञा शब्द प्राणिवाचक तथा अप्राणिवाचक दोनों हो सकते हैं। ◯

(ग) जातिवाचक संज्ञा शब्दों का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में कभी नहीं हो सकता। ◯

(घ) द्रव्यवाचक संज्ञा के अंतर्गत समूहवाची शब्द आते हैं। ◯

(ङ) यौगिक भाववाचक संज्ञा शब्दों की रचना सभी प्रकार के शब्दों से हो सकती है। ◯

(च) 'बुढ़ापा' जातिवाचक संज्ञा का उदाहरण है। ◯

(छ) 'बुराइयों से दूर रहो' वाक्य का 'बुराइयों' पद भाववाचक संज्ञा का उदाहरण है। ◯

2. कोष्ठक से उचित भाववाचक संज्ञा शब्दों का चयनकर वाक्य के रिक्त स्थानों को भरिए–

(स्वास्थ्य, व्यक्तित्व, दृढ़ता, निकटता, ठंडक, मुस्कान, चतुराई, मैल, वाहवाही, दबाव)

(क) इतनी .... मत बढ़ाओ कि बाद में तकलीफ़ हो।

(ख) कक्षा में प्रथम आने के कारण उसकी खूब .... हो रही है।

(ग) वह इन दिनों बहुत .... में काम कर रही थी।

(घ) मेले में जाने की बात सुनकर बच्चों के चेहरे पर .... आ गई।

(ङ) समय से भोजन करना अच्छे .... के लिए बहुत ज़रूरी है।

(च) .... के मौसम में शिमला में रहना बहुत कठिन होता है।

(छ) तुम्हारी .... इस बात में है कि तुम उसे कैसे मनाते हो?

Supplement Book.indb 33 4/9/2026 6:06:48 PM

(ज) अपने .... को इतना महान बनाओ कि सारी दुनिया तुम्हारी ओर देखे।

(झ) .... से आगे बढ़ते रहो, सफलता खुद तुम्हारे कदम चूमेगी।

(ञ) उसके हाथ-पैरों पर इतना .... जमा था कि खुद शरम आ रही थी।

3. निम्नलिखित शब्द संज्ञा के किस भेद के अंतर्गत आते हैं? लिखिए।

कामधेनु, राजा, हिमालय, आगरा, किसान, लंगूर, लकड़ी, मुंबई, चना, तेल, मदद, मछली, सुंदरता, गंगा, बचपन

व्यक्तिवाचक संज्ञा– ....
....

जातिवाचक संज्ञा– ....
....

द्रव्यवाचक संज्ञा– ....
....

भाववाचक संज्ञा– ....
....

4. वाक्यों के रिक्त स्थानों में, कोष्ठक में दिए गए शब्दों के भाववाचक संज्ञा रूप भरिए।

(क) .... के दिनों में बहुत जोश होता है। (युवक)

(ख) आचार्य जी के .... के विषय में किसी को संदेह नहीं है। (पंडित)

(ग) मुझे देखते ही उसके चेहरे की .... उड़ गई। (रंग)

(घ) शर्मा जी की .... इन दिनों ठीक से नहीं चल रही। (वकील)

(ङ) उन्होंने तो अपना जीवन भगवान की .... में ही लगा दिया है। (सेवक)

(च) माँ की .... का कोई मोल नहीं है। (मम)

(छ) इस दूध में बिलकुल .... नहीं है। (चिकना)

(ज) .... से मनुष्य सबको प्रभावित कर सकता है। (बुद्धिमान)

(झ) व्यक्ति का सबसे बड़ा दुश्मन .... है। (क्रोधित)

5. भाववाचक संज्ञा में बदलिए–

(क) भ्राता	....	(ख) निज	....
(ग) प्रसन्न	....	(घ) कुमार	....
(ङ) बंधु	....	(च) सेवक	....
(छ) अहं	....	(ज) कड़वा	....
(झ) गंभीर	....	(ञ) ठंडा	....
(ट) अरुण	....	(ठ) विद्वान	....
(ड) अस्ति	....	(ढ) बुलाना	....
(ण) चपल	....	(त) उड़ना	....

6. रेखांकित पद संज्ञा के किस भेद के अंतर्गत आते हैं?

(क) विभीषणों का किसी भी देश में अभाव नहीं है। ....

(ख) जयचंदों की परवाह न करते हुए महात्मा गांधी ने देश को स्वतंत्र कराया। ....

(ग) हमारे शहर में हरिश्चंद्रों की कमी नहीं है। ....

(घ) हमने रघुओं की गाथा सुनी। ....

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. जातिवाचक और व्यक्तिवाचक संज्ञा तथा जातिवाचक और भाववाचक संज्ञा का अंतर उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
2. भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण मुख्यत: कितने प्रकार के शब्दों से हो सकता है? एक-एक उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
3. जातिवाचक संज्ञा व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में किस प्रकार प्रयुक्त होती है? उदाहरण देकर समझाइए।
4. एक ऐसा वाक्य बनाइए जिसमें किसी व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में किया गया हो।
5. ऐसे दो उदाहरण दीजिए जहाँ जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग किया गया हो।

❑❑❑

Supplement Book.indb 34 4/9/2026 6:06:48 PM

4

सर्वनाम
(Pronoun)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए–

'**मोहन** कक्षा में आया। **मोहन** ने बस्ता रखा। **मोहन** ने किताब निकाली। **मोहन** पढ़ने लगा। **मोहन** ने अध्यापक की बात सुनी और उत्तर लिखने लगा।'

वैसे तो इस गद्यांश के सभी वाक्य व्याकरण की दृष्टि से सही हैं परंतु फिर भी यह गद्यांश सुनने में अटपटा लग रहा है। क्योंकि हिंदी भाषा-भाषी इन वाक्यों को कभी इस तरह नहीं बोलेगा। वह बार-बार वाक्य में 'मोहन' (संज्ञा) शब्द को दोहराना नहीं चाहेगा। इसी गद्यांश का सहज तथा मान्य रूप यह होगा–

'**मोहन** कक्षा में आया। **उसने** बस्ता रखा। **उसने** किताब निकाली। **वह** पढ़ने लगा। **उसने** अध्यापक की बात सुनी और उत्तर लिखने लगा।'

अर्थात पहले वाक्य में जो संज्ञा आई है यदि आगे के वाक्यों में उसी संज्ञा के विषय में बात की जा रही है तो हम उस संज्ञा को दोहराते नहीं हैं, बल्कि उसके स्थान पर अन्य शब्दों का प्रयोग करते हैं। जैसे उपर्युक्त गद्यांश में मोहन के स्थान पर **'उसने'**, तथा **'वह'** शब्द रूपों का प्रयोग किया गया है।

इस तरह 'नाम' या 'संज्ञा' शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले ये शब्द भी वाक्य में वही प्रकार्य (function) करते हैं, जिस प्रकार का प्रकार्य संज्ञा शब्द कर रहे थे। व्याकरण में ऐसे शब्दों को 'सर्वनाम' कहते हैं।

वाक्यों में संज्ञा की पुनरावृत्ति (बार-बार प्रयोग में आना) से बचने के लिए नाम या संज्ञा शब्दों के स्थान पर 'संज्ञा' का ही प्रकार्य करने वाले जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, वे शब्द 'सर्वनाम' कहे जाते हैं।

'नाम' तथा 'संज्ञा' समान अर्थवाले शब्द हैं। 'सर्व' का अर्थ होता है–'सबका'; अर्थात जो शब्द समस्त संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होकर संज्ञा का ही प्रकार्य करते हैं, वे **'सर्वनाम'** कहलाते हैं।

सर्वनाम : भेद-प्रभेद

सभी सर्वनाम एक ही प्रकार के नहीं होते। सर्वनाम के छह भेद किए जाते हैं–

1. पुरुषवाचक – मैं/हम, तू/तुम/आप, वह/वे
2. निश्चयवाचक – यह (समीपवर्ती), वह (दूरवर्ती)
3. अनिश्चयवाचक– कोई (प्राणिवाचक), कुछ (अप्राणिवाचक)
4. प्रश्नवाचक – कौन (प्राणिवाचक), क्या (अप्राणिवाचक)
5. संबंधवाचक – जो.....सो (वह)
6. निजवाचक – आप (स्वयं, खुद)।

1. पुरुषवाचक सर्वनाम– जब हम बातचीत करते हैं तो कोई-न-कोई सुनने वाला (श्रोता) हमारे सामने अवश्य होता है। कभी बोलने वाले (वक्ता के) बारे में बात होती है; कभी सुनने वाले (श्रोता) के बारे में और कभी किसी तीसरे (अनुपस्थित) व्यक्ति के बारे में। ऐसी स्थिति में इन तीनों ही व्यक्तियों (पुरुषों)–**बोलने वाले, सुनने वाले** तथा **जो वहाँ उपस्थित नहीं है,** के लिए जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया जाता है, वे पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

इस प्रकार पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हो जाते हैं–

(क) उत्तम पुरुष– बोलने वाला व्यक्ति या वक्ता अपने नाम के स्थान पर या अपने लिए जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करता है, वे **उत्तम पुरुष सर्वनाम** कहे जाते हैं। **'मैं'** (एकवचन) तथा **'हम'** (बहुवचन) इसके अंतर्गत आते हैं।

(ख) मध्यम पुरुष–वक्ता के द्वारा श्रोता के नाम के स्थान पर या श्रोता के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें **मध्यम पुरुष सर्वनाम** कहते हैं। **'तू'**, **'तुम'** तथा **'आप'** मध्यम पुरुष सर्वनाम के उदाहरण हैं।

संरचना की दृष्टि से तो **'तू'** एकवचन रूप है तथा **'तुम'** और **'आप'** बहुवचन रूप–'तुम' सामान्य स्थिति

Supplment Book.indb 35 4/9/2026 6:06:48 PM

के लिए तथा 'आप' आदर देने के लिए प्रयोग किया जाता है। परंतु हिंदी भाषा-भाषी समाज में इनके प्रयोग सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश से नियंत्रित हैं।

'तू' का प्रयोग–हिंदी भाषा-भाषी सामान्यत: 'तू' सर्वनाम का एकवचन में प्रयोग दो स्थितियों में करता है–

(*i*) जहाँ अत्यंत निकटता और आत्मीयता हो; जैसे–मित्रों के बीच।

(*ii*) किसी का असम्मान करने के लिए।

'तुम' का प्रयोग–सामान्य स्थितियों में एकवचन में 'तू' के स्थान पर 'तुम' का ही प्रयोग होता है। बहुवचन में प्राय: तुम के साथ 'लोग' लगाकर **'तुम लोग'** (बहुवचन रूप) बोला जाता है।

'आप' का प्रयोग–'आप' का प्रयोग भी एकवचन में निम्नलिखित संदर्भों में किया जाता है–

(*i*) औपचारिक संबंधों में किसी अनजान अपरिचित के लिए व्यक्ति।

(*ii*) सम्मान तथा आदर देने के लिए।

बहुवचन के रूप में 'आप' के साथ भी प्राय: 'लोग' शब्द का प्रयोग किया जाता है– **'आप लोग'।**

(ग) अन्य पुरुष– वक्ता तथा श्रोता से भिन्न, अनुपस्थित किसी अन्य तीसरे व्यक्ति के नाम के स्थान पर या अनुपस्थित तीसरे व्यक्ति के लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है, वह **अन्य पुरुष सर्वनाम** कहलाता है।

अन्य पुरुष सर्वनाम के अंतर्गत **'वह'** (एकवचन) तथा **'वे'** (बहुवचन) रूप आते हैं। समीप की वस्तुओं तथा व्यक्तियों के लिए **'वह'** के स्थान पर **'यह'** का भी प्रयोग मिलता है। सम्मान देने के लिए एकवचन में **'हम'** तथा **'आप'** शब्दों का भी प्रयोग होता है; जैसे–डॉ० राजेंद्र प्रसाद **हमारे** देश के राष्ट्रपति थे। **आप** कुशल नेता ही नहीं महान विद्वान भी थे।

2. **निश्चयवाचक सर्वनाम–** वे सर्वनाम जो किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना आदि का निश्चित बोध कराते हैं, **निश्चयवाचक सर्वनाम** कहलाते हैं। यह निश्चित बोध समीप की वस्तुओं का भी हो सकता है तथा दूर की वस्तुओं का भी। दूरवर्ती या दूर के किसी व्यक्ति या वस्तु के लिए **'वह'** और समीप रखी वस्तु या व्यक्ति के लिए **'यह'** का प्रयोग होता है; जैसे–

(दूर रखी कुरसी की ओर इशारा करते हुए) → **वह** ले आओ।

(पास रखे गिलास की ओर संकेत करते हुए) → यह लाना ज़रा।

प्राय: इन पास और दूर की वस्तुओं के लिए इशारा या संकेत भी किया जाता है, अत: निश्चयवाचक सर्वनाम को **संकेतवाचक सर्वनाम** भी कहते हैं।

3. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम–** किसी वस्तु या व्यक्ति के संबंध में जब कोई अनिश्चयपूर्ण स्थिति हो अर्थात यह स्पष्ट न हो कि वह वस्तु क्या है या वह व्यक्ति कौन है, तब जिन सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है, वे **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** कहे जाते हैं।

अत: 'अनिश्चयवाचक सर्वनाम' वे सर्वनाम होते हैं, जिनसे किसी निश्चित व्यक्ति, प्राणी अथवा वस्तु का बोध नहीं होता है। हिंदी में इस अनिश्चितता को प्रकट करने के लिए हम **'कोई'** (व्यक्ति के लिए) तथा **'कुछ'** (वस्तु के लिए) सर्वनामों का प्रयोग करते हैं; जैसे–

(क) मुझे ऐसा लगा जैसे दरवाज़े के पीछे **कोई** खड़ा है। (ख) आपको **कोई** बुला रहा है।

(ग) **कुछ** खाकर बाहर जाना। (घ) बच्चों के लिए बाज़ार से **कुछ** ले आना।

Supplement Book.indb 36 4/9/2026 6:06:48 PM

इन वाक्यों में 'कोई' तथा 'कुछ' के प्रयोगों से स्पष्ट है कि वक्ता जिस व्यक्ति के बारे में बोल रहा है या जिन वस्तुओं को खाने या बाज़ार से मँगवाने की बात कर रहा है, उनके विषय में वह निश्चित नहीं है।

4. **प्रश्नवाचक सर्वनाम**–अनेक बार हमारे मन में किसी वस्तु, व्यक्ति, प्राणी या किसी घटना (क्रिया) के संबंध में प्रश्न उठते रहते हैं कि वह व्यक्ति कौन है, वह वस्तु या घटना क्या थी आदि-आदि। ऐसी स्थिति में उस व्यक्ति या वस्तु के स्थान पर हम प्रश्नवाचक सर्वनामों का प्रयोग करते हैं; जैसे–

(क) यहाँ **कौन** रहता है? (ख) मेरे साथ **कौन** चलेगा?

(ग) आप आज शाम को **क्या** कर रहे हैं? (घ) व्रत के दिन आप **क्या** खाते हैं?

(ङ) इन किताबों में से आपको **कौन-सी** चाहिए? (च) आपने इतने मकान देखे, बताइए **कौन-सा** पसंद आया?

इस प्रकार जो सर्वनाम किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, घटना आदि के बारे में प्रश्न का बोध कराते हैं, **प्रश्नवाचक सर्वनाम** कहलाते हैं।

5. **संबंधवाचक सर्वनाम** – आप जानते है कि मिश्रित वाक्यों में एक प्रधान उपवाक्य होता है तथा शेष आश्रित उपवाक्य। कुछ सर्वनाम ऐसे होते हैं जो प्रधान उपवाक्य में आए संज्ञा या सर्वनामों के साथ आश्रित उपवाक्यों का संबंध जोड़ने का कार्य करते हैं। ऐसे सर्वनामों को **संबंधवाचक सर्वनाम** कहा जाता है। हिंदी में **'जो'** तथा **'जिस'** संबंधवाचक सर्वनाम के उदाहरण हैं। देखिए, निम्नलिखित उदाहरण–

(क) वह लड़का पकड़ा गया, **जो** अकसर झूठ बोलता है। (ख) वह पेंसिल लाओ, **जो** पिता जी ने दिलवाई थी।

(ग) यह वही किताब है, **जिसे** तुम पढ़ना चाहते थे। (घ) यह वही लड़की है, **जिससे** रोहन की शादी हो रही है।

(ङ) **जिसको** पैसा मिलेगा, वह काम क्यों नहीं करेगा? (च) **जो** बेईमानी करता है, वह कभी आगे नहीं बढ़ सकता।

उपर्युक्त पहले चारों वाक्यों में **'जो'**, **'जिसे'**, **'जिससे'** सर्वनाम पहले उपवाक्य में आई संज्ञा–**लड़का**, **पेंसिल**, **किताब** तथा **लड़की** से संबंधित हैं तथा वाक्य (ङ) तथा (च) में **'जिसको'** तथा **'जो'** सर्वनाम परवर्ती उपवाक्यों में आए **'वह'** सर्वनाम से संबंध स्थापित कर रहे हैं। अन्य उपवाक्यों के संज्ञा/सर्वनामों के साथ संबंध स्थापित करने वाले ये सर्वनाम **संबंध वाचक सर्वनाम** कहे जाते हैं।

6. **निजवाचक सर्वनाम**– 'निज' शब्द का अर्थ होता है–'अपना'। जिन सर्वनामों का प्रयोग वक्ता वाक्य के कर्ता के लिए करता है, वे **निजवाचक सर्वनाम** कहे जाते हैं; जैसे–

(क) मैं **स्वयं** चला जाऊँगा। (ख) आप रहने दीजिए वह **अपने-आप** ठीक कर लेगा।

(ग) वह **खुद** खाना बनाती है।

सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषण

निश्चयवाचक (यह, वह), अनिश्चयवाचक (कोई, कुछ) तथा प्रश्नवाचक (कौन, क्या, कौन-सी) आदि सभी सर्वनाम सार्वनामिक विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त हो सकते हैं, अतः सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषणों में अंतर करके चलना चाहिए।

ध्यान रखिए–

- यदि ये संज्ञा के स्थान पर आ रहे हैं तो **'सर्वनाम'** होंगे; जैसे–

  1. मुझे **यह** पता है कि दीया डॉक्टर है। (निश्चयवाचक सर्वनाम)
  2. घंटी बजी है, **कोई** आया है। (अनिश्चयवाचक सर्वनाम)
  3. **कौन** बुला रहा है? (प्रश्नवाचक सर्वनाम)

  इन तीनों वाक्यों में यह, कोई तथा कौन किसी-न-किसी संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त किए जा रहे हैं।

- परंतु जब ये सर्वनाम किसी संज्ञा के पूर्व लगकर संज्ञा की विशेषता बताते हैं, तब **'सार्वनामिक विशेषण'** कहलाते हैं–

Supplement Book.indb 37 4/9/2026 6:06:48 PM

1. मैं **<u>यह</u> किताब** खरीदना चाहता हूँ। (सार्वनामिक विशेषण)

2. घंटी बजी है **<u>कोई</u> लड़का** आया है। (सार्वनामिक विशेषण)

3. **<u>कौन</u> लड़का** तुमसे बात करेगा? (सार्वनामिक विशेषण)

सर्वनाम की रूप-रचना

सर्वनामों में परसर्गों (विभक्तियों) के प्रभाव से रूप-परिवर्तन होता है। इसके लिए चार रूपावली वर्ग बनाए गए हैं–

1. रूपावली वर्ग–I पुरुषवाचक
2. रूपावली वर्ग–II निश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, संबंधवाचक
3. रूपावली वर्ग–III अनिश्चयवाचक
4. रूपावली वर्ग–IV निश्चयवाचक

रूपावली वर्ग - I **पुरुषवाचक**

विभक्ति		एकवचन			बहुवचन		
		उत्तम पुरुष	**मध्यम पुरुष**	**अन्य पुरुष**	**उत्तम पुरुष**	**मध्यम पुरुष**	**अन्य पुरुष**
मूल		मैं	तू	वह	हम	तुम/आप	वे
तिर्यक	ने	मैंने	तूने	उसने	हमने	तुमने/आपने	उन्होंने
	से, में, पर	मुझसे, मुझमें, मुझ पर	तुझसे, तुझमें, तुझ पर	उससे, उसमें, उस पर	हमसे, हममें, हम पर	तुमसे, तुममें, तुम पर, आपसे, आपमें, आप पर	उनसे, उनमें, उन पर
	को	मुझे ~ मुझको	तुझे ~ तुझको	उसे ~ उसको	हमें ~ हमको	तुम्हें ~ तुमको, आपको	उन्हें ~ उनको
संबंधवाची	का, के, की, रा, रे, री	मेरा, मेरी, मेरे	तेरा, तेरी, तेरे	उसका, उसकी, उसके	हमारा, हमारी, हमारे	तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे	उनका, उनकी, उनके

रूपावली वर्ग - II **निश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, संबंधवाचक**

विभक्ति		एकवचन			बहुवचन		
		निश्चयवाचक	**प्रश्नवाचक**	**संबंधवाचक**	**निश्चयवाचक**	**प्रश्नवाचक**	**संबंधवाचक**
मूल		यह वह	कौन क्या	जो –	ये वे	कौन क्या	जो –
तिर्यक	ने	इसने, उसने	किसने	जिसने	इन्होंने, उन्होंने	किन्होंने	जिन्होंने
	से, में, पर	इससे, इसमें इस पर, उससे, उसमें उस पर	किससे, किसमें, किस पर	जिससे, जिसमें, जिस पर	इनसे, इनमें, इन पर, उनसे, उनमें, उन पर	किनसे, किनमें, किन पर	जिनसे, जिनमें, जिन पर
	को	इसको ~ इसे उसको ~ उसे	किसको ~ किसे	जिसको ~ जिसे	इनको ~ इन्हें उनको ~ उन्हें	किनको ~ किन्हें	जिनको ~ जिन्हें
संबंध वाची	का, के, की	इसका, इसके, इसकी, उसका, उसके, उसकी	किसका, किसके, किसकी	जिसका, जिसके, जिसकी	इनका, इनके, इनकी, उनका, उनके, उनकी	किनका, किनके, किनकी	जिनका, जिनके, जिनकी

Supplment Book.indb 38 4/9/2026 6:06:48 PM

रूपावली वर्ग - III **अनिश्चयवाचक**

विभक्ति		**एकवचन**			**बहुवचन**	
मूल		कोई		कुछ	कोई	कुछ
तिर्यक	ने, से, को, में, पर	किसी ने, किसी से, किसी को, किसी में, किसी पर	किसी + परसर्ग	कुछ	किन्हीं ने, किन्हीं से, किन्हीं को, किन्हीं में, किन्हीं पर	कुछ
संबंधवाची	का, के, की	किसी का, किसी के, किसी की	किसी + परसर्ग	कुछ	किन्हीं का, किन्हीं के, किन्हीं की	कुछ

विशेष : 'कुछ' का रूप सदा वही रहता है।

रूपावली वर्ग - IV **निजवाचक**

विभक्ति		**एकवचन**		**बहुवचन**	
मूल		(अपने) आप, स्वयं		(अपने) आप, स्वयं	
तिर्यक	ने, से, को, में, पर	(अपने) आप से (अपने) आप पर (अपने) आप में (अपने) आप को	स्वयं से स्वयं पर स्वयं में स्वयं को	(अपने) आप से (अपने) आप पर (अपने) आप में (अपने) आप को	स्वयं से स्वयं पर स्वयं में स्वयं को
संबंधवाची	ना, ने, नी	अपना, अपने, अपनी		अपना, अपने, अपनी	

सर्वनाम रूप-रचना संबंधी कुछ महत्वपूर्ण बिंदु

- संज्ञा की भाँति सर्वनाम लिंग के अनुसार परिवर्तित नहीं होते। सर्वनाम वाले वाक्यों में लिंग का पता क्रिया के रूप से लगता है; जैसे–

  1. बच्चा दौड़ रहा था, **वह** गिर **गया।** 2. लड़की दौड़ रही थी, **वह** गिर **गई।**

  उपर्युक्त दोनों ही वाक्यों में पुल्लिंग कर्ता 'बच्चा' तथा स्त्रीलिंग कर्ता 'लड़की' के लिए 'वह' सर्वनाम का ही प्रयोग हुआ है। क्रिया के रूप 'गिर गया/गिर गई' से पता चल रहा है कि कौन-सा 'वह' पुल्लिंगवाची है और कौन-सा स्त्रीलिंगवाची।

- 'आप' सर्वनाम को छोड़कर लगभग सभी सर्वनामों के परसर्ग 'को' वाले दो-दो रूप मिलते हैं; जैसे–

  मुझको ~ मुझे तुमको ~ तुम्हें तुझको ~ तुझे
  हमको ~ हमें उसको ~ उसे उनको ~ उन्हें
  इसको ~ इसे इनको ~ इन्हें जिसको ~ जिसे
  किनको ~ किन्हें किसको ~ किसे जिनको ~ जिन्हें

- **मैं, तू, तुम** तथा **हम** सर्वनामों के कुछ अशुद्ध रूपों को जान लेना चाहिए; जैसे– मेरे को, तेरे को, तुम्हारे को, हमारे को। इन अशुद्ध रूपों से बचना चाहिए तथा इनके स्थान पर क्रमशः मुझको ~ मुझे, तुझको ~ तुझे, तुमको ~ तुम्हें तथा हमको ~ हमें रूपों का ही प्रयोग करना चाहिए।

- अनिश्चयवाचक सर्वनाम **'कुछ'** परिमाण तथा संख्या दोनों का बोध कराता है; जैसे–

  1. आपके घर में तो इतना दूध-घी होता है, **कुछ** हमारे यहाँ भी भिजवा दिया कीजिए। (परिमाणवाची)
  2. आपके घर में इतने मेहमान आए हैं, **कुछ** को हमारे यहाँ भेज दीजिए। (संख्यावाची)

Supplement Book.indb 39 4/9/2026 6:06:48 PM

- प्राय: सभी सर्वनाम रूपों के साथ **'ही'** अव्यय जोड़ा जा सकता है; जैसे–

  1. तुम ही को जाना होगा। 2. उसे ही दूध नहीं मिला। 3. हमें ही क्यों परेशान करते हो?

  सर्वनाम के साथ परसर्ग तथा 'ही' का योग दो प्रकार से हो सकता है–

  (क) **सर्वनाम** + **परसर्ग** + **ही**

  1. **तुम्हारे लिए** ही तो मैं यहाँ आया हूँ। 2. **तुझे ही** सब लोग क्यों याद करते हैं?

  (ख) **सर्वनाम** + **ही** + **परसर्ग,** जैसे– मुझी को, उसी को आदि। इस स्थिति में ही अव्यय सर्वनाम के साथ संयुक्त हो जाता है; जैसे–

मुझ + ही → मुझी	तुम + ही → तुम्हीं	उस + ही → उसी
उन + ही → उन्हीं	तुझ + ही → तुझी	इन + ही → इन्हीं
इस + ही → इसी	किन + ही → किन्हीं	किस + ही → किसी

- सर्वनाम शब्दों का संबोधन रूप नहीं बनता।

सर्वनाम : पुनरुक्ति तथा संयुक्त रूप

हिंदी में बहुत-से सर्वनाम ऐसे हैं, जिनको पुनरुक्ति के रूप में उच्चरित किया जाता है तथा कुछ को संयुक्त रूप में। इससे अर्थ में विशिष्टता आ जाती है; जैसे–

पुनरुक्त रूप– पुनरुक्त रूपों में उसी सर्वनाम की दोबारा आवृत्ति होती है; जैसे–

	सर्वनाम	उदाहरण		सर्वनाम	उदाहरण
1.	जो-जो	**जो-जो** चलना चाहे, उसे ले चलिए।	2.	कोई-कोई	**कोई-कोई** तो परेशान कर देता है।
3.	क्या-क्या	**क्या-क्या** खरीद लाए आप बाज़ार से?	4.	किस-किस	**किस-किस** से झगड़ा करते रहोगे?
5.	कौन-कौन	**कौन-कौन** आ रहा है पार्टी में?	6.	कुछ-कुछ	**कुछ-न-कुछ** तो खरीदूँगा ही।
7.	अपना-अपना	ये सामान रखा है, **अपना-अपना** उठा ले जाओ।			

संयुक्त रूप–कभी-कभी दो सर्वनाम संयुक्त होकर भी प्रयुक्त होते हैं; जैसे–

1. जो + कोई → जो कोई **जो कोई** इधर से निकलेगा, पकड़ा जाएगा।
2. जो + कुछ → जो कुछ **जो कुछ** भी लाए हो, यहीं रख दो।

ध्यान देने योग्य बातें

- सर्वनाम संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं।
- सर्वनाम के भेद :

  (*i*) पुरुषवाचक – मैं, हम, तू, तुम, आप, वह, वे (*ii*) निश्चयवाचक – यह, वह

  (*iii*) अनिश्चयवाचक – कोई, कुछ (*iv*) प्रश्नवाचक – कौन, क्या

  (*v*) संबंधवाचक – जो, सो (*vi*) निजवाचक – आप, स्वयं, खुद
- सर्वनाम लिंग के आधार पर परिवर्तित नहीं होते तथा सर्वनाम शब्दों का संबोधन रूप नहीं होता।

Supplment Book.indb 40 4/9/2026 6:06:48 PM

अभ्यास-कार्य

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. सही कथन के सामने '✔' तथा गलत कथन के सामने '✘' लगाइए–

(क) हिंदी में 'आप' सर्वनाम का प्रयोग केवल आदर देने के लिए ही किया जाता है। ◯

(ख) संज्ञा तथा सर्वनाम मूलत: एक ही हैं। ◯

(ग) उत्तम पुरुष सर्वनामों का प्रयोग वक्ता खुद के लिए करता है। ◯

(घ) 'वह' पुरुषवाचक और निश्चयवाचक दोनों भेदों में आ सकता है। ◯

(ङ) 'जिसने' सर्वनाम निजवाचक सर्वनाम का उदाहरण है। ◯

(च) 'तू' सर्वनाम का एकवचन में प्रयोग निकटतम संबंधों में ही होता है। ◯

(छ) 'आप' सर्वनाम का प्रयोग आदर-सम्मान देने के लिए किया जाता है। ◯

2. रेखांकित सर्वनामों के भेद लिखिए–

(क) क्या <u>आप</u> इसी शहर में रहते हैं?

(ख) उस लड़के ने <u>मुझे</u> धोखा दिया है।

(ग) <u>इसे</u> (किताब की ओर इशारा करते हुए) उस मेज़ पर रख दो।

(घ) बाहर आपका <u>कोई</u> इंतज़ार कर रहा है।

(ङ) इस दुकान को <u>कौन</u> चलाता है?

(च) <u>जिसे</u> नौकरी चाहिए, वह मेरे साथ चले।

3. निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम छाँटकर लिखिए–

(क) कोई व्यक्ति तो मुझे स्टेशन पर लेने आएगा?

....

(ख) इस घर में कौन रहता है?

....

(ग) हम लोग कल शिमला जा रहे है।

....

(घ) मेरी किताबें तुमने कहाँ रखी हैं?

....

(ङ) आपको इन कमरों में से कौन-सा चाहिए?

....

(च) वह आदमी पकड़ा गया जिसने चोरी की थी।

....

(छ) बच्चे अपना काम ख़ुद कर सकते हैं।

....

(ज) आज तुम्हें मेरा काम करना ही होगा।

....

4. कोष्ठक में दिए गए निर्देशों के अनुसार वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) वह अपना कमरा .... साफ़ करेगी। (निजवाचक सर्वनाम)

(ख) यह वही आदमी है .... आपके यहाँ चोरी की थी। (संबंधवाचक सर्वनाम)

(ग) बाहर दरवाज़े पर .... आपका इंतज़ार कर रहा है। (अनिश्चयवाचक सर्वनाम)

(घ) .... किससे बात की थी? (मध्यम पुरुष, एकवचन)

(ङ) .... किस होटल में ठहरे हैं? (अन्य पुरुष, बहुवचन)

(च) (घड़ी की ओर इशारा करते हुए) .... खराब हो चुकी है? (निश्चयवाचक, एकवचन)

(छ) क्या .... पिकनिक पर नहीं जाएगी? (अन्य पुरुष, एकवचन)

(ज) आज .... मंदिर में पूजा करेंगे। (उत्तम पुरुष बहुवचन)

5. निम्नलिखित वाक्यों में सर्वनामों का गलत प्रयोग हुआ है। रेखांकित सर्वनाम शब्दों की जगह सही सर्वनामों का प्रयोग कीजिए।

Supplment Book.indb 41 4/9/2026 6:06:48 PM

उदाहरण– मेरे को कोई भी नौकरी चाहिए। = मुझको कोई भी नौकरी चाहिए।

(क) हमें तेरे से कोई मतलब नहीं है।

....

(ख) जो मन लगाकर काम करेगा वही को इनाम मिलेगा।

....

(ग) शायद गली में कुछ शोर मचा रहा है।

....

(घ) तुम तुम्हारे काम पर ध्यान दो।

....

(ङ) (पास में रखी कुरसी की ओर इशारा करते हुए) वह यहाँ से ले जाओ।

....

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. सर्वनाम किसे कहते हैं? सोदाहरण लिखिए।
2. सर्वनाम के कितने भेद हैं? प्रत्येक के उदाहरण देते हुए दो-दो वाक्य बनाइए।
3. 'आप' सर्वनाम का प्रयोग मध्यम पुरुष, अन्य पुरुष और निजवाचक सर्वनाम के रूप में कीजिए।
4. अंतर स्पष्ट कीजिए–

   (क) पुरुषवाचक सर्वनाम तथा निश्चयवाचक सर्वनाम

   (ख) निश्चयवाचक सर्वनाम तथा अनिश्चयवाचक सर्वनाम

   (ग) संबंधवाचक सर्वनाम तथा निजवाचक सर्वनाम
5. 'तू' और 'आप' का प्रयोग मध्यम पुरुष में कब किया जाता है?
6. अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम 'वह' और निश्चयवाचक सर्वनाम 'वह' का वाक्य में प्रयोग करते हुए अंतर स्पष्ट कीजिए।

❑❑❑

Suppliment Book.indb 42 4/9/2026 6:06:48 PM

5 अव्यय या अविकारी शब्द : निपात
(Indeclinable Words: Particles)

बच्चो, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया **'विकारी'** शब्द कहलाते हैं, क्योंकि जब भी इनका प्रयोग वाक्य में किया जाता है, तो इनके रूप में कुछ-न-कुछ परिवर्तन हो जाता है। इसी परिवर्तन को 'विकार' कहते हैं। इनके अलावा हिंदी में ऐसे भी शब्द मिलते हैं, जो वाक्य में प्रयुक्त होकर जैसे के तैसे बने रहते हैं। लिंग, वचन, कारक आदि के कारण उनके रूप में कोई विकार या परिवर्तन नहीं होता। इन्हें **'अविकारी'** या **'अव्यय'** शब्द कहा जाता है; जैसे– यहाँ, वहाँ, नीचे, ऊपर, बाहर, भीतर, हे, रे, अरे, और, या, तो, ने, से, को, पर आदि।

वे शब्द जिनके रूप में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण किसी भी तरह का कोई परिवर्तन (विकार) नहीं होता, 'अविकारी' या 'अव्यय' शब्द कहलाते हैं।

अविकारी शब्दों के भेद–

इनके प्रमुख भेद इस प्रकार हैं–

1. क्रियाविशेषण 2. संबंधबोधक 3. समुच्चयबोधक 4. विस्मयादिबोधक 5. निपात

- **सी॰बी॰एस॰ई॰ के नए पाठ्यक्रम के अनुसार प्रस्तुत पाठ में हम केवल निपात के बारे में ही चर्चा करेंगे।**

निपात

बच्चो, **निपात**, वे अव्यय शब्द हैं, जो वाक्य में किसी भी शब्द के बाद प्रयुक्त होकर उस शब्द पर बल देने का कार्य करते हैं। इस तरह जब भी किसी शब्द पर विशेष बल देना हो, तब उस शब्द के आगे निपात का प्रयोग किया जाता है।

हिंदी में सात शब्दों का एक वर्ग है, जिसे हम निपात कहते हैं। ये हैं– **ही, भी, तो, तक, न, भर/मात्र, भला**। देखिए इनके प्रयोग–

(क) **ही**	**अर्थ**
1. तुम्हें **ही** यहाँ से जाना होगा।	(सिर्फ़ तुम्हें ही जाना होगा, किसी और को नहीं)
2. उसे खाना **ही** बनाना होगा।	(सिर्फ़ खाना ही बनाना होगा, कुछ और नहीं)
3. उसे खाना बनाना **ही** होगा।	(सिर्फ़ बनाने का काम करना होगा, कुछ और नहीं)
(ख) **भी**	
1. तुम **भी** कल मेरे साथ चलो।	(और लोग तो चल ही रहे हैं, तुम भी चलो)
2. तुम कल **भी** मेरे साथ चलो।	(तुम आज तो चले ही हो कल, भी चलो)
3. तुम कल मेरे साथ **भी** चलो।	(औरों के साथ तो जाते ही हो, मेरे साथ भी चलो)
(ग) **तो**	
1. मीरा **तो** शादी नहीं करेगी।	(और लोग तो शादी कर सकते हैं, पर मीरा नहीं करेगी)
2. मीरा शादी **तो** नहीं करेगी।	(मीरा शादी के अलावा कुछ भी कर सकती है)
3. मीरा शादी करेगी **तो** नहीं।	('करेगी' क्रिया पर अधिक बल, शादी नहीं करेगी)
(घ) **तक**	
1. माँ **तक** ने मुझसे बात नहीं की।	(और लोगों ने तो बात की ही नहीं, माँ ने भी नहीं की)
2. माँ ने मुझ **तक** से बात नहीं की।	(माँ ने किसी से बात नहीं की)
3. माँ ने मुझसे बात **तक** नहीं की।	(अन्य कार्य तो जाने दो, माँ ने बात तक नहीं की)

Supplment Book.indb 43 4/9/2026 6:06:48 PM

(ङ) **न**

1. कल **न**, वे लोग ज़रूर आएँगे। (कल, कालवाची क्रियाविशेषण पर विशेष बल)
2. पापा ने **न**, कल झूठ बोला था। (पापा के झूठ बोलने पर बल)

(च) **भर/मात्र**

1. मैं तो उससे मिला **भर** हूँ। (बहुत कम समय के लिए मिलने की बात)
2. तुम्हारा एक बार कहना **भर** काफ़ी है। ('कहना' क्रिया पर अधिक बल)

(छ) **भला**

1. मुझे व्याकरण की समझ कहाँ है **भला**। (मुझे व्याकरण की समझ नहीं है)
2. तुम मुझसे क्यों बात करोगी **भला**। (तुम मुझसे बात नहीं करोगी)

निपात के विषय में जानने योग्य बातें

- निपातों का अपना कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं होता, अत: जिन लोगों की भाषाओं में निपात के समकक्षी शब्द नहीं होते, उन्हें निपातों के/को सीखने/सिखाने में बहुत कठिनाई होती है।
- ऊपर दिए गए निपातों के उदाहरणों को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि निपातों को दो उपवर्गों में बाँटा जा सकता है–

(क) वे निपात जिनका प्रयोग वाक्य/उपवाक्य स्तर से ऊपर का होता है।

इस उपवर्ग में **तो, ही, भी** और **तक** चार निपात आते हैं। ये चारों ऐसे निपात हैं जिनका, **सरल वाक्यों/उपवाक्यों में प्रयोग बिना किसी संदर्भ के नहीं हो सकता; जैसे–**

लड़का – (छोटे गाँव में) यहाँ होटल मिलेगा क्या?

ग्रामीण – छोटा-सा शहर है बाबू। होटल **तो** क्या, धर्मशाला **भी** नहीं मिलेगी।

बिना संदर्भ के 'होटल तो क्या, धर्मशाला भी नहीं मिलेगी।' जैसे वाक्यों का प्रयोग अलग से नहीं किया जा सकता। आइए, इन चारों निपातों के प्रयोग से संबंधित प्रमुख बातों को समझते हैं।

1. तो – का प्रयोग

'तो' निपात का प्रयोग प्राय: किसी वक्तव्य में कही गई बात का खंडन करने के लिए या अपनी ओर से विकल्प की पुष्टि करने के लिए होता है; जैसे–

वक्तव्य	**प्रतिवक्तव्य**
(*i*) तुम मेरे साथ चलोगी?	मैं **तो** नहीं चलूँगी।
(*ii*) आप खाना खाइए।	मैं खाना **तो** नहीं चाहता पर आप कहते हैं **तो** थोड़ा खा लेता हूँ।
(*iii*) मैं चाय नहीं पीता।	कॉफी **तो** पी लोगे?

2. ही – का प्रयोग

'ही' निपात का प्रयोग प्राय: कही गई बात की पुष्टि करने के लिए किया जाता है; जैसे–

(*i*) तुम यहाँ रुकोगे?	हाँ, मैं **ही** यहाँ रुकूँगा।
(*ii*) नाश्ता करोगे?	नाश्ता **ही** नहीं, लंच भी करूँगा।
(*iii*) कहाँ से आ रहे हो, बाज़ार से?	हाँ, बाज़ार से **ही** आ रहा हूँ।

3. भी – का प्रयोग

'भी' निपात प्राय: किसी कथन का दूसरे संदर्भ में विस्तार करता है; जैसे–

(*i*) तुम नाश्ता नहीं करोगे तो मैं **भी** नाश्ता नहीं करूँगा।

(*ii*) आप रुकेंगे?.... हाँ, मैं **भी** रुकूँगा। (*iii*) मैं रुक रहा हूँ, आप **भी** रुकिए न।

Supplment Book.indb 44 4/9/2026 6:06:48 PM

4. तक – का प्रयोग

'तक' निपात का प्रयोग 'भी' निपात की तरह ही होता है। पर हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि कहाँ 'तक' का प्रयोग निपात के रूप में हो रहा है और कहाँ परसर्ग (Postposition) के रूप में। इस बात को समझने के लिए निम्नलिखित उदाहरण देखिए–

(*i*) वह स्कूल से घर तक पैदल आया। (तक परसर्ग के रूप में)

(*ii*) पिता जी तक इस बात को जानते हैं। (तक निपात के रूप में)

वाक्य (*ii*) में तक का तात्पर्य है कि पिता जी वह व्यक्ति हैं, जिन तक बात पहुँचनी नहीं चाहिए थी, भले ही दूसरे सब लोग जानते हों; पर पिता जी तक बात पहुँच गई। इस वाक्य में यह सारा अर्थ केवल एक निपात से ही व्यक्त हो रहा है।

(ख) वे निपात जिनका प्रयोग वाक्य/उपवाक्य के भीतर ही होता है।

इस उपवर्ग में **न**, **भला** और **भर** तीन निपात आते हैं तथा सरल वाक्य/उपवाक्य के कथन के अर्थ को ही विशिष्ट अर्थ प्रदान करते हैं।

5. भला - का प्रयोग

'भला' निपात सामान्य निषेधात्मक वाक्यों के स्थान पर बिना निषेधात्मक अव्यय के प्रयोग के कथ्य का खंडन करता है; जैसे–

(*i*) वह नृत्य नहीं जानती। वह नृत्य क्या जाने भला?

(*ii*) हमें समय पर तनख़्वाह कभी नहीं मिलती। हमें कभी समय पर तनख़्वाह मिलती है भला।

6. न – का प्रयोग

'न' निपात पुष्टिसूचक निपात है। जिस कथन के संदर्भ में संशय होता है, उसकी पुष्टि के लिए इस निपात का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

(*i*) आज **न**, तूफ़ान आने वाला है। (*ii*) सर ने न, यह बात बताई थी।

(*iii*) कल **न**, आप मिठाई लाए थे।

7. भर - का प्रयोग

'भर' निपात का प्रयोग **मात्र** के अर्थ में होता है; जैसे–

(*i*) वह अपने बेटे को एक नज़र **भर** देखना चाहती है।

(*ii*) उस जैसे लफंगे को समझाने **भर** से क्या होगा।

(*iii*) मुझे नौकरी **भर** मिल जाए, फिर सब ठीक हो जाएगा।

हिंदी में 'भर' का प्रयोग कालवाची क्रियाविशेषणों में संज्ञा के साथ अवधि की सूचना देने के लिए भी किया जाता है; जैसे–

(*i*) आज वह **दिन भर** सोता रहा। (कालवाची क्रियाविशेषण)

(*ii*) तुमने **साल भर** मस्ती की है। (कालवाची क्रियाविशेषण)

इसके अलावा **भर** का प्रयोग **'समस्त या सारा'** के अर्थ में भी होता है, जैसे–

- यह बात **दुनिया भर** में फैल गई है।

भर का चौथा प्रयोग **भरना** क्रिया के अर्थ में भी होता है; जैसे–

(*i*) आज बेचारे को **पेट भर** खाना मिला है। (*ii*) आज तो उसने **मन भर** खाना खाया।

भर के इस तरह के प्रयोगों और निपात के रूप में होने वाले प्रयोगों में अंतर करके चलना चाहिए।

ध्यान देने योग्य बातें

- वे शब्द जिनके रूप में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण किसी भी तरह का कोई परिवर्तन (विकार) नहीं होता, 'अविकारी' या 'अव्यय' शब्द कहलाते हैं।
- अविकारी शब्दों के प्रमुख भेद इस प्रकार हैं–क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक तथा निपात।
- निपात, वे अव्यय शब्द हैं जो वाक्य में किसी भी शब्द के बाद प्रयुक्त होकर उस शब्द पर बल देने का कार्य करते हैं।
- निपातों के अंतर्गत आने वाले शब्द हैं– ही, भी, तो, तक, न, भर/मात्र, भला।
- निपातों को दो उपवर्गों में बाँटा जा सकता है– (क) वे निपात जिनका प्रयोग वाक्य/उपवाक्य स्तर से ऊपर का होता है। तथा (ख) वे निपात जिनका प्रयोग वाक्य/उपवाक्य के भीतर ही होता है।

अभ्यास-कार्य

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित निपातों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) ही – ....

(ख) भी – ....

(ग) तो – ....

(घ) तक – ....

(ङ) भर – ....

(च) भला – ....

2. वाक्यों के रिक्त स्थानों में उचित निपात भरिए–

(क) आपको मेरी बहन की शादी में आना .... होगा।

(ख) उसे माफ़ी .... माँगनी .... पड़ेगी।

(ग) तुम्हें .... मेरे लिए खाना बनाना होगा।

(घ) तुमको हिंदी कहाँ आती है .... ।

(ङ) वह अपने बच्चे को नज़र .... देखना चाहती है।

(च) उस बच्चे को बचाओ .... ।

3. दिए गए वाक्यों में कुछ निपातों का प्रयोग गलत हुआ है। गलत प्रयोगों को सही करके लिखिए–

(क) बच्चों को घुमाने न ले जाओ।

(ख) तुमको भला मेरे साथ चलना होगा।

(ग) देखने भर से मुझे तसल्ली नहीं हुई।

(घ) आप न, बहुत चालाक हो।

(ङ) नौकरी तो से गुजारा नहीं होता।

(च) केवल बच्चों को भी इनाम मिलना चाहिए था।

4. पाठ्यपुस्तक 'गंगा' से लिए गए इस गद्यांश में निपातों को रेखांकित कीजिए।

"लेकिन गधे का एक छोटा भाई और भी है, जो उससे कम ही गधा है, और वह है 'बैल'। जिस अर्थ में हम 'गधा' शब्द का प्रयोग करते हैं, कुछ उसी से मिलते-जुलते अर्थ में 'बछिया के ताऊ' का भी प्रयोग करते हैं। कुछ लोग बैल को शायद बेवकूफ़ों में सर्वश्रेष्ठ कहेंगे; मगर हमारा विचार ऐसा नहीं है। बैल कभी-कभी मारता भी है, कभी-कभी अड़ियल बैल भी देखने में आता है। और भी कई रीतियों से अपना असंतोष प्रकट कर देता है; अतएव उसका स्थान गधे से नीचा है।"

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. निपात शब्द का व्याकरण में मुख्य कार्य क्या है? उदाहरण देकर समझाइए।
2. वाक्य से बाहर कार्य करने वाले निपात कौन-कौन से हैं?
3. निपात को 'अव्यय' की श्रेणी में क्यों रखा जाता है?
4. तुमने तो कमाल कर दिया?–यहाँ 'तो' क्या कार्य कर रहा है?
5. किसी वाक्य में से निपात हटा देने पर उस पर क्या प्रभाव पड़ता है? उदाहरण देकर समझाइए।

❑❑❑

Suppliment Book.indb 46 4/9/2026 6:06:48 PM

पाठ्यपुस्तक 'गंगा' में प्रयुक्त उपसर्गों की सूची

गद्य खंड

पाठ-1 दो बैलों की कथा

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
असंतोष	अ	संतोष	**कुसमय**	कु	समय
अन्याय	अ	न्याय	**दुर्दशा**	दुर्	दशा
अभूतपूर्व	अ	भूतपूर्व	**दुर्बल**	दुर्	बल
विद्रोह	वि	द्रोह	**प्रतिवाद**	प्रति	वाद
सद्गुण	सत्	गुण	**अपमान**	अप	मान

पाठ-2 क्या लिखूँ?

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
उपयुक्त	उप	युक्त	**अनुसंधान**	अनु	संधान
प्रसिद्ध	प्र	सिद्ध	**अस्पष्ट**	अ	स्पष्ट
विशेष	वि	शेष	**अभिव्यक्ति**	अभि	व्यक्ति
अनादि	अन्	आदि	**प्रगति**	प्र	गति
अनुसरण	अनु	सरण	**अत्यंत**	अति	अंत

पाठ-3 संवादहीन

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
संवाद	सम्	वाद	**स्वभाव**	स्व	भाव
अनगिनत	अन	गिनती	**अतिरिक्त**	अति	रिक्त
अनहोनी	अन	होनी	**अनुसार**	अनु	सार
अनुमान	अनु	मान	**बेवक्त**	बे	वक्त

पाठ-4 ऐसी भी बातें होती हैं

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
अनुशासन	अनु	शासन	**दुर्लभ**	दूर्	लभ
बाकायदा	बा	कायदा	**असंख्य**	अ	संख्य
स्वाभिमान	स्व	अभिमान	**समर्पित**	सम्	अर्पित
सम्मान	सम्	मान	**अनुकूल**	अनु	कूल
प्रदर्शन	प्र	दर्शन	**स्वभाव**	स्व	भाव
प्रचलन	प्र	चलन	**अभिव्यक्त**	अभि	व्यक्त

पाठ-5 आखिरी चट्टान तक

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
असंभव	अ	संभव	**सम्मिश्रण**	सम्	मिश्रण
अतिरिक्त	अति	रिक्त	**अनंत**	अन्	अंत

पाठ-6 रीढ़ की हड्डी

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
प्रशासनिक	प्र	शासन + इक (प्रत्यय)	**प्रसारण**	प्र	सार + अन् (प्रत्यय)
आजीवन	आ	जीवन	**विकास**	वि	कास
अध्ययन	अधि	अयन	**व्यवस्था**	वि + अव	स्था

पाठ-7 मैं और मेरा देश

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
प्रसिद्ध	प्र	सिद्ध	**सम्मानित**	सम्	मान + इत (प्रत्यय)
स्वतंत्रता	स्व	तंत्र + ता (प्रत्यय)	**विशेष**	वि	शेष
उपलब्ध	उप	लब्ध	**अटूट**	अ	टूट
दुर्भाग्य	दुर्	भाग्य	**अनुभव**	अनु	भव
सजग	स	जग	**विदेशी**	वि	देश + ई (प्रत्यय)
अध:पतन	अध:	पतन	**दुर्व्यवहार**	दुर्	व्यवहार

काव्य खंड

पाठ-8 रैदास के पद

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
विख्यात	वि	ख्यात	**अविचल**	अ	विचल
अद्वितीय	अ	द्वितीय	**अडिग**	अ	डिग
सम्मिलित	सम्	मिल + इत (प्रत्यय)	**अनेक**	अन्	एक

पाठ-9 राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
प्रसिद्ध	प्र	सिद्ध	**अपमाने**	अप	माने (मान)
सुभाउ	सु	भाउ (भाव)	**अविभाज्य**	अ	विभाज्य

पाठ-10 भारति, जय, विजयकरे!

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
विजय	वि	जय	**उपस्थित**	उप	स्थित
अविस्मरणीय	अ + वि	स्मरण + ईय (प्रत्यय)	**सहानुभूति**	सह	अनुभूति

प्रवाह	प्र	वाह	**प्रस्तुत**	प्र	स्तुत
अनेक	अन्	एक	**प्रकाश**	प्र	काश

पाठ-11 झाँसी की रानी

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
प्रतिबद्धता	प्रति	बद्ध + ता (प्रत्यय)	**स्वतंत्रता**	स्व	तंत्र + ता (प्रत्यय)
अवतारी	अव	तार + ई (प्रत्यय)	**विद्रोह**	वि	द्रोह
दुर्दशा	दुर्	दशा	**सम्मान**	सम्	मान
विजय	वि	जय	**अपमान**	अप	मान
अपरंपार	अ	परंपार	**अचेत**	अ	चेत

पाठ-12 घर की याद

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
स्वाधीनता	स्व	अधीन + ता (प्रत्यय)	**परिजन**	परि	जन
उपयुक्त	उप	युक्त	**अनपढ़**	अन	पढ़
अभागा	अ	भागा			

Suppliment Book.indb 49 4/9/2026 6:06:48 PM

पाठ्यपुस्तक 'गंगा' में प्रयुक्त प्रत्ययों की सूची

गद्य खंड

पाठ-1 दो बैलों की कथा

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
मानवीय	मानव	ईय	**घनिष्ठता**	घनिष्ठ	ता
शक्तिशाली	शक्ति	शाली	**चिकनाहट**	चिकना	आहट
भारतीय	भारत	ईय	**चौकीदार**	चौकी	दार

पाठ-2 क्या लिखूँ?

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
यथार्थता	यथार्थ	ता	**दुर्बोधता**	दुर् (उपसर्ग) + बोध	ता
कठिनाई	कठिन	आई	**सुंदरता**	सुंदर	ता
विद्‌वता	विद्‌वान	ता	**कर्कशता**	कर्कश	ता
प्रगतिशील	प्रगति	शील	**आवश्यकता**	आवश्यक	ता

पाठ-3 संवादहीन

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
संवादहीन	संवाद	हीन	**धैर्यवान**	धैर्य	वान
फड़फड़ाता	फड़फड़ा	ता	**घरवाली**	घर	वाली
अकेलापन	अकेला	पन	**रोशनदान**	रोशन	दान
आदर्शवादी	आदर्श	वादी	**निहारकर**	निहार	कर

पाठ-4 ऐसी भी बातें होती हैं

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
स्मृतियाँ	स्मृति	याँ	**गंभीरता**	गंभीर	ता
तालियाँ	ताली	इयाँ	**व्यक्तित्व**	व्यक्ति	त्व
धार्मिक	धर्म	इक	**व्यक्तिगत**	व्यक्ति	गत
तकनीकी	तकनीक	ई	**कलाकार**	कला	कार
संगीतकार	संगीत	कार	**मज़ेदार**	मज़े	दार

पाठ-5 आखिरी चट्टान तक

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
समाधिस्थ	समाधि	स्थ	**टोलियाँ**	टोली	इयाँ
दार्शनिक	दर्शन	इक	**समेटता**	समेट	ता
सार्थकता	सार्थक	ता	**युवतियाँ**	युवती	इयाँ
भौगोलिक	भूगोल	इक	**आकृतियाँ**	आकृति	इयाँ

पाठ-6 रीढ़ की हड्डी

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
साहित्यिक	साहित्य	इक	**भारतीय**	भारत	ईय
चर्चित	चर्चा	इत	**परंपरागत**	परंपरा	गत
रूढ़िगत	रूढ़ि	गत	**लिखाई**	लिख	आई
पढ़ाई	पढ़	आई	**मिठाई**	मीठा	आई
जवानी	जवान	ई	**चतुराई**	चतुर	आई
नमकीन	नमक	ईन	**रंगीन**	रंग	ईन
मजबूरी	मजबूर	ई	**खूबसूरती**	खूबसूरत	ई
अनुभवी	अनुभव	ई	**कायरता**	कायर	ता
छुट्टियाँ	छुट्टी	इयाँ	**सादगी**	सादा	गी

पाठ-7 मैं और मेरा देश

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
पत्रकारिता	पत्रकार	इता	**साहित्यिक**	साहित्य	इक
पूर्णता	पूर्ण	ता	**निजता**	निज	ता
नागरिक	नगर	इक	**मानवता**	मानव	ता
गहराई	गहरा	आई	**ऊँचाई**	ऊँचा	आई
हीनता	हीन	ता	**श्रेष्ठता**	श्रेष्ठ	ता
कठिनाई	कठिन	आई	**सफलता**	सफल	ता
शारीरिक	शरीर	इक	**मानसिक**	मानस	इक
सामाजिक	समाज	इक	**धार्मिक**	धर्म	इक
भारतीय	भारत	ईय	**राष्ट्रीय**	राष्ट्र	ईय

काव्य खंड

पाठ-8 रैदास के पद

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
व्यावहारिक	व्यवहार	इक	**समानता**	समान	ता
भाईचारा	भाई	चारा	**शुद्धता**	शुद्ध	ता
आंतरिक	अंतर	इक	**राती**	रात	ई

पाठ-9 राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
सृजनात्मक	सृजन	आत्मक	**कवितावली**	कविता	अवली
गीतावली	गीत	अवली	**दोहावली**	दोहा	अवली
मानवीय	मानव	ईय	**सेवकाई**	सेवक	आई

पाठ-10 भारति, जय, विजयकरे!

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
रचनाकार	रचना	कार	**दार्शनिकता**	दर्शन	इक + ता
भौगोलिक	भूगोल	इक	**प्रेरणादायक**	प्रेरणा	दायक
तरलता	तरल	ता	**प्रकाशित**	प्रकाश	इत

पाठ-11 झाँसी की रानी

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
लोकप्रियता	लोकप्रिय	ता	**वीरता**	वीर	ता
मर्दानी	मर्द	आनी	**झाँसीवाली**	झाँसी	वाली
भवानी	भव	आनी	**आज़ादी**	आज़ाद	ई
अधिकारी	अधिकार	ई	**सवारी**	सवार	ई

पाठ-12 घर की याद

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
सुनहरा	सुन	हरा	**सक्रियता**	सक्रिय	ता
भागीदारी	भाग	दार + ई	**स्वाधीनता**	स्व (उपसर्ग) + अधीन	ता
लिखावट	लिख	आवट	**हँसमुख**	हँस	मुख
बुढ़ापा	बूढ़ा	आपा	**कठिनाई**	कठिन	आई

Suppliment Book.indb 52 4/9/2026 6:06:48 PM